माँ मीरा की पीर है

माँ चंदा की चांदनी, माँ सूरज की धूप
वक्त पड़े ज्वालामुखी, वक्त पड़े जलकूप
दरिया, माँ की नम्रता, इसमें इतना प्यार
जीवन भर टूटे नहीं जिसकी अविरल धार
माँ मीरा की पीर है, माँ कबीर का सत्य
माँ अमीर की शायरी, तुलसी का लालित्य
माँ में गीता सार है, माँ में वेद पुराण
माँ में पावन बाइबिल, माँ में रचा है कुरान
माँ सीता का त्याग है, माँ राधा का प्यार
माँ है पर्वत सी अडिग, माँ गंगा की धार
माँ वीणा का तार है, माँ मुरली की तान
बिन माँ के जीवन लगे, नीरस बेपहचान

–अज्ञात

छत्र-छाया

राम सीता में विवाद चल रहा था। बड़ा कौन?

मैं या तू (सीता)

पर बात संकेत में चल रही थी ।

राम कहते– वृक्ष बड़ा

सीता कहती– बेल (लता) बड़ी

बहस ने विवाद का रुप ले लिया।

इतने में लक्ष्मण आये पूछा– क्या विवाद चल रहा है?

राम ने कहा – कुछ नहीं। मैं कह रहा हूँ – वृक्ष बड़ा, तुम्हारी माता कह रहीं है– बेल बड़ी। अच्छा लक्ष्मण तुम निर्णय करो कौन बड़ा?

लक्ष्मण ने सोचकर कहा– भैय्या न तो वृक्ष बड़ा, न बेल बड़ी (बड़ा तो उनकी छाया में बैठने वाला अर्थात् मैं लक्ष्मण)

राम सीता एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

वास्तव में जो यह सोचता है कि मैं माँ बाप से अलग होकर बडा हो जाऊँगा। वह गलत फहमी का शिकार है। संसार में भी बड़ा लड़का यदि बाप से अलग हो जावे छोटा लड़का माँ बाप के पास हो तो बड़ा घर माँ बाप का ही कहलाता है।

स्तुति

तर्ज– इतनी शक्ति हमें....

माँ–पिता से पाया ये जीवन, बात ये ना कभी हम भुलायें।
बूढ़े माँ–बाप को हर खुशी दें, कर्ज से कर्ज अपना चुकायें।।

गोद के झूले में था झुलाया, उँगली थामें था चलना सिखाया।
बरसों तक वो चैन से ना सोये, पर हमें चैन से था सुलाया।
आँसू पोंछे जिन्होंने हमारे, भूलकर भी न उनको रुलायें।।

हमको नादान समझकर हमारी भूल हर माफ कर दी जिन्होंने।
कुछ बनें हम इसी आरजू में, दाव पर उम्र हार दी जिन्होंने।
हमपे कुर्बान कर दी जवानी, उनका दिल ना कभी हम दुःखायें।।

तर्ज– ओ माँ...

ओ माँ–माँ तू कितनी अच्छी है, तू कितनी प्यारी है।
ये जो दुनिया है, जीवन काँटों का, तू फुलवारी है।।

दुखन लागी हैं माँ तेरी आंखियाँ।
मेरे लिए जागी है तू सारी–सारी रतियाँ।
ओ मेरी निंदिया पे, तेरी निंदिया भी तूने वारी है।।

अपना नहीं तुझे, सुख–दुःख कोई।
मैं मुस्काया तू मुस्कायी, मैं रोया तू रोयी।
मेरे हँसने पे मेरे रोने पे तू बलिहारी है।।

माँ बच्चों की जाँ होती है।
वो होते हैं किस्मत वाले जिनके माँ होती है।
तू कितनी सुंदर है, तू कितनी शीतल है।।

॥ श्री महावीराय नमः ॥

॥ जय गुरु सौभाग्य-सूर्य-उमेश-लाल-मान-कान-पारस-गुलाब गुरुभ्यो नमः ॥

नानीबाई

"हृदय को झकझोरने वाली कड़ियाँ"

माँ कैसी हो, इतना पूछ उसे मिल गया सब कुछ ...

✲ संकलन ✲

पूज्य श्री कान गुरुदेव के शिष्य

अभिग्रहधारी, उग्र विहारी – राजेश मुनि

सेवा भावी – राजेन्द्र मुनि

सहयोग 10/-

जयन्तिलालजी मेहता

स्व. श्री शांतिलालजी मेहता (पिताजी)
श्रीमती शांताबाई मेहता (माताजी)
श्री अश्विनकुमार श्रीमती प्रतिभा मेहता (पुत्र-पुत्रवधु)
कु. सिद्धि मेहता (पुत्री), कु. सुहानी मेहता (पोत्री)
मास्टर अभिषेक मेहता (पोत्र)
चेलना - गौरवजी नलवाया (पुत्री-कंवरसा.)
बहन-बहनोई – पुष्पा-प्रकाशचंदजी बोहरा, मीना-पारसकुमारजी जैन
सुषमा-राजेन्द्रजी पितलिया

श्रीमती सरलाजी मेहता

श्री दीपचंदजी गांधी

पुत्र-पुत्रवधु – अमृतलाल-विमलादेवी
शांतिलाल-संगीतादेवी
पौत्र-पौत्रवधु – राकेश-अस्मिता गांधी
रितेश गांधी
पड़पौत्री – रिद्धी गांधी
मो. 09424529195

स्व. श्रीमती कमलाबाई गांधी

स्व. श्री बाबुलालजी खाबिया की स्मृति में
धर्मपत्नी श्रीमति पुष्पा देवी खाबिया

गौतम-साधनादेवी, अर्पिता, स्वाति, सिद्धी खाबिया
कुशलगढ़, जिला बाँसवाड़ा - 327801 (राज.)
प्रतिष्ठान-आनंद श्री वस्त्रालय - कुशलगढ़
खाबिया ज्वेलर्स – कुशलगढ़
फोन :- 02965-275532, 275376, 094136-25335

श्री शांतिलालजी किसनदासजी शिंगी
सौ. सुरजबाई शांतिलालजी शिंगी
कोपरगांव (महा.)

श्री महावीरजी शांतिलालजी शिंगी	श्री अजीतजी शांतिलालजी शिंगी	श्री भरतजी शिंगी
सौ. सरोज महावीरजी शिंगी	सौ. उज्वला अजीतजी शिंगी	सौ. रश्मि भरजी शिंगी
राहुल-नम्रता-खुश	कुं.अंकिता,	कु. निकीता, कु. ऐश्वर्या
अभय-पूनम	चि. अक्षय	चि. आलोक
आनंद	चि. श्रेणिक	

मंगल भाव

माता-पिता की सेवा करने वाला, विनयी होता है। वही गुरु की सेवा कर पाता है जिसने माँ बाप की सेवा की हो।

भगवान ने समाज को संत सति के माँ-बाप की उपमा दी है। श्रवण कुमार माँ-बाप की सेवा से ही प्रसिद्ध हुये। भीष्म पितामह ने पिता की इच्छा के लिए आजीवन ब्रह्मचर्य ग्रहण कर लिया।

ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जिन्होंने माँ-बाप की सेवा करके आदर्श उपस्थित किया है। प्रस्तुत पुस्तक में मुझे जो पढ़कर अच्छा लगा वह संकलन है। कहाँ से क्या पढ़ा ये तो स्पष्ट याद नहीं, पर आलोक सेठी खंडवा द्वारा संकलित पुस्तक एवं मुनि महाबोधिविजय की पुस्तक से कुछ अंश लिये हैं। कुछ सुना हुआ। कुछ चिंतन किया। सब कुछ आपके पास है। पढ़कर अच्छा लगे तो माता-पिता को कम से कम नित्य प्रणाम का नियम बनाना, तो मेरा यह प्रयास आगे गति प्रदान करेगा।

बहुत शीघ्रता से प्रकाशन होने से त्रुटियाँ संभव है। कुछ क्रम आगे-पीछे हो सकता है, पर आप पढ़कर माता-पिता कीसेवा में पीछे न हटेंगे।

''नानी बाई'' शीर्षक क्यों लिया गया ? आपके मन में प्रश्न हो रहा होगा। आचार्य भगवंत पू. श्री उमेश गुरुदेव की माता श्रीका नाम ''नानीबाई'' था। उस वीरमाता को शतशः धन्य है, जिसने आचार्य भगवंत जैसे महापुरुष को जन्म देकर उत्तम शिक्षा प्रदान की।

ऐसा कभी मत करना :

* जिस माँ-बाप ने बेटे को बोलना सिखाया
  बड़े होकर माँ-बाप चुप रहने के लिये मत कहना।
* जब बँटवारा हो तो,
  माँ बाप को भाई को मत देना।
* माँ बाप को अपने कार्यों से रुलाना मत।
* यदि रुलाया तो उनके आंसुओं में
  हमारा सौभाग्य धुल जायेगा।

– राजेश मुनि

अणु - संदेश

माता-पिता का उपकार बहुत है- इसे समझने का प्रयास करना योग्य है। जब मल-मूत्र में भी विवेक नहीं था, अपनी भूख-प्यास को भी न बता सकते थे, अरे! मुँह पर बैठी हुई मक्खियाँ भी नहीं उड़ा सकते थे, तब सभी प्रकार से माता ने सम्हाला और पिता ने प्रेम देकर अपने पैरों पर खड़ा रहना सिखाया, शिक्षित बनाया और सभी प्रकार से योग्य बनाया। ऐसे अनेकों उपकारों का स्मरण करके माता-पिता के प्रति कृतज्ञ बनने में ही पुत्र का हित है।

माता-पिता का हमारे प्रति क्या कर्तव्य था या क्या है? - ऐसा सोचने पर उनके प्रति असन्तोष, रोष, क्रोध आदि अविनय और अभक्ति के भाव उत्पन्न होते हैं। क्योंकि उनके व्यवहार में दोष ही दोष दिखायी देते हैं। किन्तु माता-पिता के प्रति क्या कर्तव्य है और मैं उन्हें पूरे कर रहा हूँ या नहीं - ऐसा चिन्तन करने से माता-पिता के प्रति भक्ति-भाव उत्पन्न होते हैं। क्योंकि अपने प्रति किये गये उनके उपकार दृष्टि-पथ में आते हैं।

प.पू. आचार्य श्री उमेशमुनिजी म.सा.

प्रस्तावना

प.पू. अभिग्रहधारी, उग्र विहारी, श्री राजेशमुनिजी म.सा. के द्वारा माँ विषय पर संकलित पुस्तक ''नानी बाई '' के नवीन बहुरंगीय अंक को पूर्व से अधिक प्रभावी एवं चित्रमयी बनाने के प्रयास से निश्चित ही पुस्तक की महिमा अधिकाधिक महानुभावों तक पहुँचेगी।

''जो महिला यह चाहती है कि उसका बेटा श्रवणकुमार बने,
तो इतना सा करें कि अपने पति को श्रवण कुमार बना दे।''

''नानीबाई'' पुस्तक पढ़ी। प्रूफ संशोधन किया। पढ़कर हृदय भर आया। माता-पिता की वात्सल्यता का कोई माप नहीं। पू.श्री ने इसका संकलन कर समाज को प्रेरित करने का जो कार्य किया उसके लिए साधुवाद।

रुचि मूणत, नेहा सकलेचा, रतलाम | **नीरीश रूनवाल, रतलाम**

तर्क वहाँ नर्क

''श्रवण कुमार ने माँ पिता को यह कहते सुना कि हमने काशी हरिद्वार यात्रा दर्शन नहीं किये। श्रवण ने माँ बाप की इच्छा पूर्ण करने की ठान ली। उसने कावड़ बनाई-यात्रा करवाई।

पर...पर...पर... ये नहीं पूछा न तर्क किया कि

''आँखे तो हैं नहीं क्या दर्शन करोगे ?''

इसीलिए हजारों बरस बाद भी श्रवण कुमार का नाम लिया जा रहा है।

दीवाली

हर दिन नया है, हर रात निराली है माँ की ममता और पिता का प्यार मिल जाए तो

हर दिन दीवाली है।

राहें रोशन रहेंगी सदा आपकी
खुद खिदमत करो अपने माँ बाप की
क्या सीरत थी क्या सूरत थी, माँ ममता की मूरत थी
पाँव छूए और काम हुये, अम्मा एक मुहुरत थी
पिता हेड ऑफ हाउस
माता हार्ट ऑफ हाउस
दिल के लहू को मेहंदी ने छिन लिया
हुआ जो बेटा जवान तो बहू ने छिन लिया
बेटी बना के लाये थे लेकिन खबर न थी
बेटा मेरा दबा के, बहू बैठ जायेगी।
वन की मिट्टी का वो कर्ज क्या चुकायेंगे
जो माँ के दूध का हम भी अदा नहीं करते हैं।
जिन्दे माता पिता को चुप करते हैं
मरने के बाद उनके फोटो पर धूप करते हैं।
हर तरफ नफरतों का साया है
तुमने कैसा ये गुल खिलाया है
एक एक पल उस पर भारी है
जिसने माँ बाप को सताया है।

सोचते रहिये।

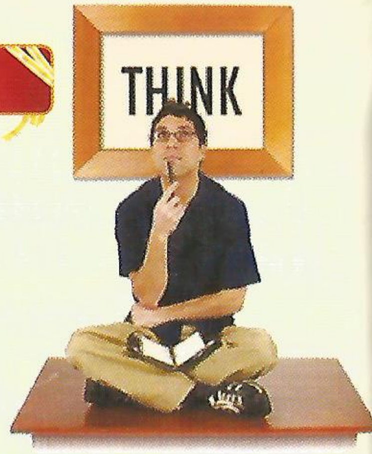

कोई आपकी एक बार भी मदद करता है तो आप उसके गुणगान गाते रहते हैं। तो माँ बाप ने आपकी कितनी ही बार मदद की।

उनका उपकार उनका गुणगान करना या नहीं ?

श्वास लेना जरुरी है तो
छोड़ना भी जरुरी है
ऐसे सेवा लेना जरुरी है
तो सेवा करना जरुरी है।
माँ बाप से हमने सेवा ली है
तो उनकी सेवा करना जरुरी है।
नहीं तो ... नहीं तो
जैसे सांस ली और छोड़ी नहीं
तो मर जायेगा
ऐसे सेवा ली और सेवा नहीं की
तो पछतावा रह जायेगा।

लड्डू चार है खाने वाले पाँच
तो लड्डू तो मुझे भाते ही नहीं
लड्डू तो मैं खाती ही नहीं ......
यह कहने वाली जो होगी
वह होगी **माँ**

फादर की कदर करो
मदर का आदर करो

कलर टीवी कलर बीवी के युग में माँ बाप को मत भूलना।

5 वर्ष का आपका बेटा आपसे प्रेम की आशा रखता है तो
70 वर्ष के माँ बाप आपसे ऐसी आशा नहीं रखेंगे ?

सोचना .....

1½ किलो के वजन को उठाने में
आपके हाथ दुखने लगते हैं
तो माँ ने नौ महीने अपने पेट में कैसे रखा होगा ?

याद रखना !

जिस दिन तुम्हारे माँ बाप तुम्हारे कारण रोते हैं
उस दिन तुम्हारा पुण्य उनके आँसुओं में बह जाता है।

भावना भाना

तेरी प्रथम श्वास के समय तेरी माँ पास थी।
उनकी अंतिम श्वास के समय मुझे उनके पास रहने का अवसर प्राप्त हो
यदि ये अवसर तुझे प्राप्त हो गया तो तू राम से बढ़कर भाग्यशाली है
क्योंकि
राम अपने माँ बाप की अंतिम श्वास के समय साथ में नहीं थे।

बुरी आदतों से बचाने वाला कौन ?

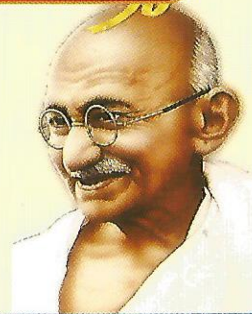

महात्मा गाँधी को जैन संत से तीन नियम
(माँस, मदिरा, स्त्रीसंग)
दिलवाने वाली उनकी माँ थी
मोहनदास को महात्मा, राष्ट्रपिता
किसने बनाया सोचना ?

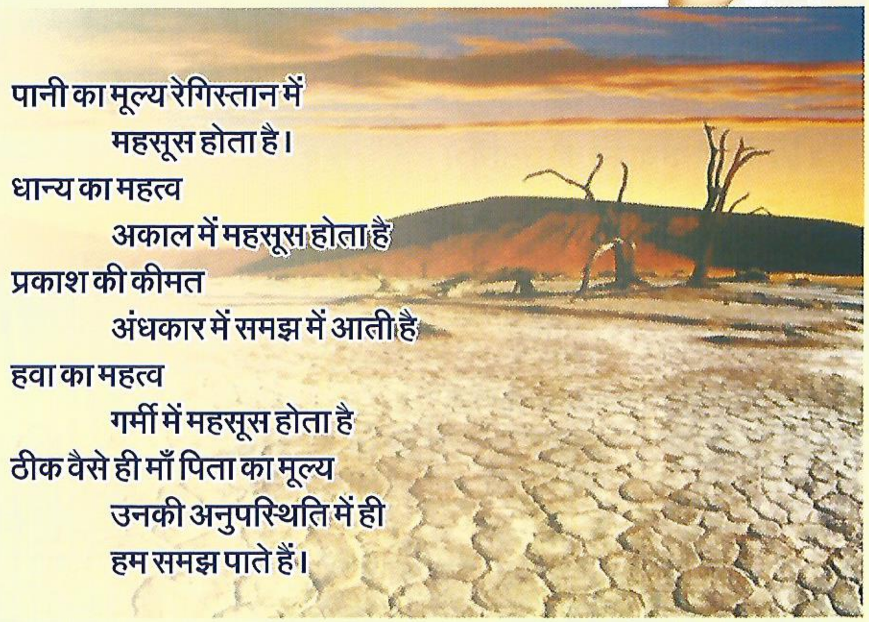

पानी का मूल्य रेगिस्तान में
महसूस होता है।
धान्य का महत्व
अकाल में महसूस होता है
प्रकाश की कीमत
अंधकार में समझ में आती है
हवा का महत्व
गर्मी में महसूस होता है
ठीक वैसे ही माँ पिता का मूल्य
उनकी अनुपस्थिति में ही
हम समझ पाते हैं।

जैन आगम **''ठाणांग सूत्र''** में बताया है,
इन तीन का उपकार चुकाना कठिन है
1. माता-पिता   2. मालिक   3. गुरु

जैन आगम **'ठाणांग सूत्र''** में बताया कि माता पिता की क्या देन है ?

1. माता के तीन अंग - खून, मांस, दिमाग

2. पिता के तीन अंग - हड्डी, केश, नाखून

एक जंगल में एक संगीतकार मृदंग बजाया करता था।

जब-जब मृदंग पर थाप पड़ती एक बकरी का बच्चा वहाँ आ जाया करता था।

एक दिन अचानक ही संगीतकार ने पूछ लिया भाई ! तुझे मेरी थाल समझ में आती है या मृदंग सुनने में तेरी रुचि है।

तब बकरी के बच्चे ने जवाब दिया न मेरी मृदंग में रुचि है ना आपकी थाल समझ में आती है मैं तो सिर्फ इतना जानता हूँ कि इस मृदंग पर जो चमड़ा चढ़ा है वह मेरी माँ के शरीर का है। जब-जब इस पर थाप पड़ती है मैं खींचा चला आता हूँ।

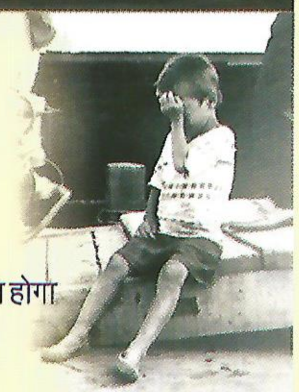

कल जब मैं काम पर जा रहा था
अचानक लगा कि कोई रोक लेगा मुझे
कहेगा खड़े-खड़े दूध मत पी हजम नहीं होगा
इतनी जल्दी अरे-दो घड़ी साँस ले ले
इतनी ठंड और कोट भूल गया इसे भी अपने साथ ले ले
मन में सोचा माँ रसोई बना रही होगी जिसके हाथों में सना आटा होगा
पर घूम कर देखा तो क्या मालूम वहाँ सन्नाटा होगा।

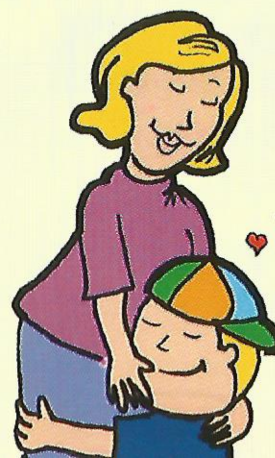

अरे अब हवायें ही तो बात करती हैं मुझसे
जब जाऊँगा किसी काम से कौन कहेगा
दही शक्कर खाले बेटा शकुन होगा
गुड़ खाले बेटा शकुन होगा
पर मन इसी बात को रोता है कि माँ सब कुछ है सब कुछ
जिस आजादी के लिए लड़ता रहा तुझसे सारी उम्र
वह सारी आजादी आज मेरे पास है
पर तेरे बिन यह मन आज उदास है।

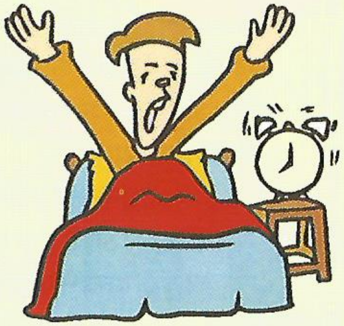

कहता था न तुझसे मैं वही करूँगा जो मेरे जी आयेगा
आज मैं वही सब कुछ करता हूँ जो मेरे जी आता है
बात ये नहीं कि कोई रोकने वाला नहीं है
गम है तो सिर्फ इतना कि
सुबह देर से उठूं तो कोई टोकने वाला नहीं है।

रात को देर से लौटू तो कौन नाराज होगा भला
कौन कहेगा बार-बार कि अब और कहाँ चला
दोस्तों के साथ घूमने पर उलाहना कौन देगा
कौन कहेगा इस उम्र में परेशान क्यों करता है।
हाय राम ! ये लड़का क्यों नहीं सुधरता है
पैसे कहाँ खर्च हो गये क्यों नहीं बताता है
सारे दिन सताता है, रात को देर से आता है
खाना गर्म करने का जागती रहूँ
खिलाने को तेरे पीछे भागती रहूँ
बहाती रहूँ आँसू तेरे लिए
कभी कुछ सोचा है मेरे लिए

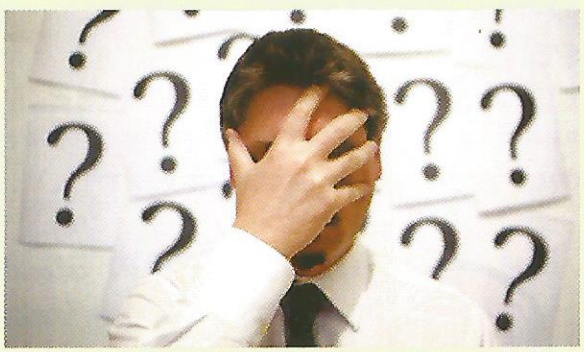

खैर .....
मेरा क्या होना है क्या हुआ है ?
तू खुश रहे बस यही दुआ है।

और और .....

आज तमाम खुशियां ही खुशियां हैं
गम ये नहीं कि कोई खुशियां बाँटने वाला होता
गम तो सिर्फ इतना है कि कोई
गलतियों पर डाँटने वाला होता।

माँ तेरी बहुत याद आती है .....

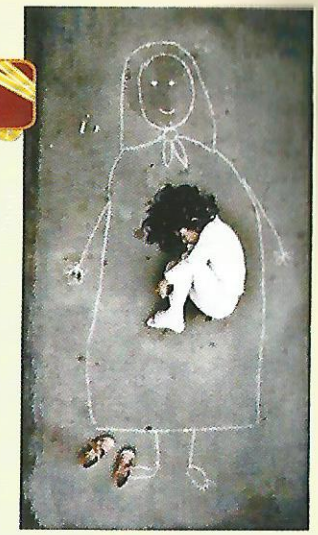

तू होती ना माँ
तो हाथ फेरती सर पर
या हल्के से बाम लगाती आवाजें देकर
आवाजें देकर बुलाती
दीवाली पर टीका लगाकर रुपया देती
और कहती
बड़ों के पाँव छूना आशीर्वाद मिलेगा
कपड़े मत फाड़ना अगला कपड़ा अगली दीवाली को सिलेगा
बहन को सताता तो तू चाँटे मारती
बीमार पड़ता तो रो रोकर नजरें उतारती
परीक्षा आते ही बादाम का दूध पिलाती
और खूब प्यार से खाना खिलाती
मस्ती करने पर पिता की डाँट पर डर दिखाती
फिर पिता की डाँट से तू ही मुझे बचाती
इसे नौकरी मिल जाय ये तरक्की करें दुआओं में हाथ उठाती
और
नौकरी के लिए घर छोड़ दूँगा सुनकर दरवाजे के पीछे
चुपके चुपके आँसू बहाती
आज सब कुछ है माँ सब कुछ
आज तरक्की की हर रेखा तेरे बेटे को छूकर जाती है

पर माँ मुझे तेरी बहुत याद आती है।

है ना आश्चर्य ?

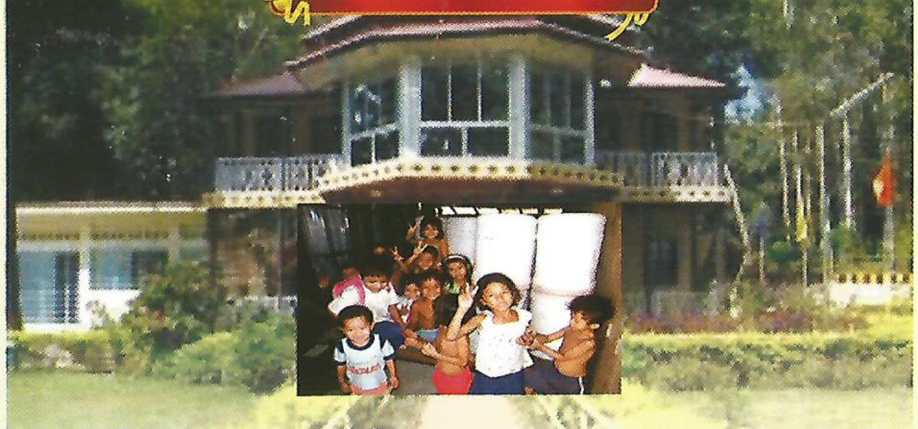

एक गरीब माँ बाप 10 बच्चों को झोपड़ी में राजी खुशी पाल लेते हैं

पर 10 बच्चे बड़े होकर 10 बंगलों में 1 माँ बाप को नहीं पाल सकते।

तू कैसा बेटा ?

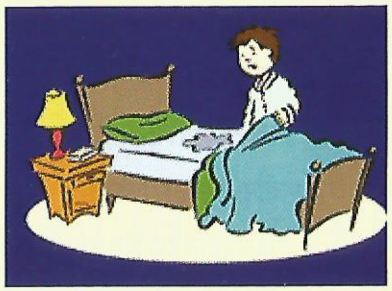

छोटा था तो गादी गीली रखता था
बड़े होने पर आँखें गीली रखता है

तुझे गीला रखने की आदत पड़ गई
है ना !

माँ बाप चौकीदार हैं क्या ?

आप दर्शन करने जाते हो
घूमने जाते हैं।

पर माँ बाप को घर रख जाते हो

तो क्या माँ बाप
चौकीदार हैं ?

नियंत्रण कक्ष

घर का वह हिस्सा जिसे
रसोईघर कहते हैं
सुबह के वक्त अस्थायी रूप से
परिवर्तित हो जाता है एक कंट्रोल रुम में
जहाँ से नियंत्रित होता है
समूचे घर का बेतरतीब यातायात
कौन, किससे पहले नहाएगा ?
छोटे की बेल्ट शायद
लॉबी में रखी मेज के नीचे होगी
लगता है बड़ा आज फिर से रुमाल
जेब में रखना भूल गया है
खाली पेट जाओगे तो
कैसे पढ़ पाओगे दिनभर
ये क्या कल के टिफिन में आधा खाना
यूं का यूं रखा हुआ है

अगर आप खुद ही देर से उठोगे तो
बच्चे तो फिर बच्चे हैं
सभी के लिए अलग-अलग तैयार होते
खाने के डिब्बों से आती खुशबू के
साथ ही
कंट्रोल रुम से जारी होते हैं
ये तमाम दिशा-निर्देश
और पूरे घर में लहराते हैं
कभी नसीहत, डाँट, झल्लाहट
तो कभी चिंता
गुस्से और नाराजगी के स्वर लेकिन हमेशा
स्नेह की चाशनी में तर-ब-तर
बीमारी या फिर और किसी भी मजबूरी में
जब कर देता है
तो दुनिया के तमाम घरों में मानो
अफरातफरी मच जाती है
और ठहर सा जाता है
जीवन का यातायात

– डॉ. कुमार विनोद, कुरुक्षेत्र

हाँ ऐसी होती है माँ ...

विश्व प्रसिद्ध लेखिका तस्लीमा नसरीन कहती हैं -

मेरी माँ दयावान, कम से कम संसाधनों में जीने वाली करुणामयी माँ थी। उन्हें कोई वस्तु लुभा नहीं सकती थी। उन्हें तनिक भी परवाह नहीं होती थी कि उनकी फटी हुई मैली साड़ी देखकर कोई क्या कहेगा या क्या सोचेगा ?

एक बार मेरे छोटे भाई कमाल का एक दोस्त हमारे घर आया। माँ ने गेट खोला। दोस्त ने पूछा-कमाल घर पर है ? माँ ने कहा-नहीं। दोस्त ने पूछा आप कौन हैं ? माँ ने कहा मैं इस घर की नौकरानी हूँ। जब मैंने सुना तो आवक् रह गई। मैंने माँ से पूछा-तुमने ऐसा क्यों किया ? माँ ने कहा-अगर यह मैली-कुचैली फटी साड़ी पहने मैं कहती कि मैं कमाल की माँ हूँ तो क्या कमाल की बदनामी नहीं होती ?

ऐसी होती है माँ ......

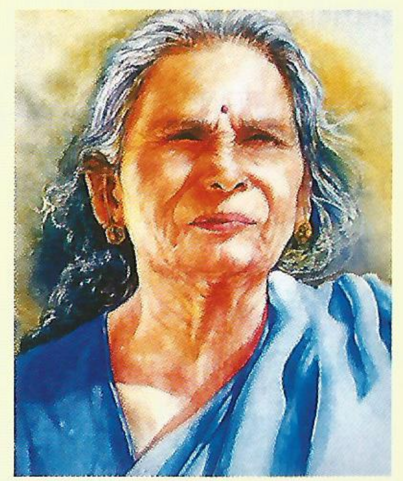

माँ

सूरज से
तेरी उपमा देने के लिये
कहता है मेरा मन
परंतु उसी क्षण
कुछ ध्यान आता है
और वही मन
हिचक जाता है
क्योंकि सूरज की
ऊर्जा तो तुझमें है
और है जन-जन को
जीवन देने की क्षमता
मन को छूने वाली ममता
परंतु यह भी
उतना ही सही है
कि सूरज की झुलसाने वाली
तेज तपन का जरा सा भी अंश
तुझमे नहीं है।

तेरे आँचल की शीतलता में
सूरज की सारी तपन
खो जाती है।
और इसलिए
सूरज की उपमा
तेरे सामने
बिलकुल व्यर्थ हो जाती है।

सागर से
तेरी उपमा देने के लिए
कहता है मेरा मन
परंतु उसी क्षण
कुछ ध्यान आता है
और वहीं मन
हिचक जाता है
क्योंकि सागर की
गहराई तो तुझमें है
और है वही धीरता
गहन-गंभीरता
परंतु यह भी
उतना ही सही है
कि सागर के खारेपन का
जरा सा भी अंश
तुझमें नहीं है

तेरे दूध की मिठास
सागर का खारापन
धो जाती है
और इसलिए
सागर की उपमा
तेरे सामने
बिलकुल व्यर्थ हो जाती है।

माँ

पर्वत से
तेरी उपमा देने के लिए
कहता है मेरा मन
परंतु उसी क्षण
कुछ ध्यान आता है
और वहीं मन
हिचक जाता है
क्योंकि पर्वतराज की ऊँचाई तो तुझमें है
और है वही अचलता
जिसका कोई दूसरा
उदाहरण नहीं मिलता
परंतु यह भी
उतना ही सही है
कि पर्वत की कठोरता का
जरा सा भी अंश
तुझमें नहीं है

तेरे मन की मृदुलता में
पर्वत की कठोरता
खो जाती है
और इसलिए
पर्वत की उपमा
तेरे सामने
बिलकुल व्यर्थ हो जाती है।

गगन से
तेरी उपमा देने के लिए
कहता है मेरा मन
परंतु उसी क्षण
कुछ ध्यान आता है
और वहीं मन
हिचक जाता है
क्योंकि गगन का
विस्तार तो तुझमें है
और है वहीं विशालता
निश्छल निर्मलता
परंतु यह भी
उतना ही सही है
कि गगन की अंतहीन दूरी का
जरा सा भी अंश
तुझमें नहीं है

तेरी गोद की समीपता में
गगन की अंतहीन दूरी
खो जाती है
और इसलिए
गगन की उपमा
तेरे सामने
बिलकुल व्यर्थ हो जाती है।

– मधुप पांडे, नागपुर

गुलदस्ता

एक दिन एक टायर कंपनी का अधिकारी मुझे बताने लगा मुझे बचपन से हर जन्मदिन पर कोई फूलों का एक गुलदस्ता भेजा करता था। पहले तो मैंने काफी खोजबीन कर पता लगाना चाहा पर मुझे गुलदस्ते में इतनी खुशी मिलती थी कि मैंने खोजने की जहमत उठाना बंद कर दी। मैंने माँ से पूछा, माँ बोली हो सकता है वो तुम्हारे तिवारी सर हों जिनकी दवाई तुम हमेशा लाकर देते हो या फिर पड़ोस के किराना दुकान वाले कन्हैया सेठ हों जिन्हें तुम ठंडा पानी पिलाते हो।

मैं जब बड़ा हुआ तो और नये विचार मन में आने लगे कि हो सकता है कोई साथ पढ़ने वाली लड़की हो जो मुझ पर मरती हो। मैं और माँ उन सारे संभावित नामों पर विचार करते रहते थे। बाद की व्यस्तता ने इस विषय पर विचार करना बंद कर दिया। जिंदगी में मोड़ आते रहे, पढ़ाई खत्म हुई, नौकरी लग गयी, तबादले होते गये, देश भर में भटकता रहा, पर वह फूलों का गुलदस्ता निर्विघ्नरूप से प्रतिवर्ष आता रहा।

इसी बीच अचानक एक दिन माँ नहीं रहीं .... । अगले जन्मदिन पर गुलदस्ता भी नहीं आया।

बंटी की मम्मी 'मायके' जा रही हैं।

बीमार हैं
बंटी की मम्मी के पिता
जरूरी है जाना
जाना जरूरी है
क्योंकि बिमार हैं पिता
और बहनें भी आ रही हैं
पिता से मिलने
बंटी के पापा नहीं जा रहे साथ
काम बहुत है दफ्तर में
इतना काम है कि
याद आ रहे हैं उन्हें अपने पिता
अकेली ही जा रही है
बंटी की मम्मी
सूचनाओं और हिदायतों की सूची
जारी करती हुई
टेस्ट है बंटी का शनिवार को
प्रश्नावली सात के सवाल
समझाना है उसे
सूख रहा है बनियान बाथरूम में
आने हैं धोबी के यहाँ से
आठ कपड़े प्रेस होकर
रखना पड़ेंगे दरवाजे खुले हुए
नहीं तो निकल जाएगी महरी चुपचाप
लॉकर की चाबी
छुपा दी है पुस्तकों के पीछे
निकाल दिये हैं कंकर चावलों में से
आटे के कनस्तर के पास रखा है
दाल का डिब्बा।
समय पर खानी है
ब्लड प्रेशर की दवाई
सचेत करती हुई बंटी के पिता को
मायके जा रही है
बंटी की मम्मी
अपने पिता से मिलने
सचमुच जा रही है
क्या मायके ?

– ब्रजेश कानूनगो

बेटा भला चंगा हो जाए ....

एक बार का किस्सा है, एक लाचार सी दिखने वाली स्त्री जो कपड़ों से अच्छे घर की मालूम हो रही थी, मेरे घर पर आयी और प्रलाप करने लगी। मेरी मम्मी जो इन लोगों की बातों में कम आती है, उसकी बात बड़े ध्यान से सुन रही थी।

वह बता रही थी कि उसका बच्चा अस्पताल में मरणासन्न हालत में भर्ती है और उसकी दवाई के लिए दो सौ रुपये चाहिये। मेरे लाख विरोध पर भी मम्मी ने उसे रुपये दे दिये। मैं ठहरा ज्यादा होशियार मैंने उस महिला का पीछा किया और पाया कि बस स्टैण्ड पर उसका लड़का तंदुरुस्त खड़ा अपनी माँ का इंतजार कर रहा है।

मैं उल्टे पैर वापस घर आया, मैंने आते ही मम्मी पर अपनी नाराजगी जाहिर की और बताया कि वह तो भला चंगा है, उसने आपको ठग लिया।

मम्मी ने तटस्थ भाव से उत्तर दिया, मैंने भी तो दो सौ रुपये इसी दुआ के साथ दिये थे कि उसका बेटा भला चंगा हो जाए।

छत्र-छाया

राम सीता में विवाद चल रहा था। बड़ा कौन ?
मैं या तू (सीता)
पर बात संकेत में चल रही थी।
राम कहते - वृक्ष बड़ा
सीता कहती - बेल (लता) बड़ी
बहस ने विवाद का रूप ले लिया।
इतने में लक्ष्मण आये पूछा - क्या विवाद चल रहा है ?

राम ने कहा - कुछ नहीं। मैं कह रहा हूँ - वृक्ष बड़ा, तुम्हारी माता कह रहीं हैं - बेल बड़ी। अच्छा लक्ष्मण तुम निर्णय करो कौन बड़ा ?

लक्ष्मण ने सोचकर कहा - भैय्या न तो वृक्ष बड़ा, न बेल बड़ी (बड़ा तो उनकी छाया में बैठने वाला अर्थात् मैं लक्ष्मण)

राम सीता एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

वास्तव में जो यह सोचता है कि मैं माँ बाप से अलग होकर बड़ा हो जाऊँगा। वह गलतफहमी का शिकार है। संसार में भी बड़ा लड़का यदि बाप से अलग हो जावे छोटा लड़का माँ बाप के पास हो तो बड़ा घर माँ बाप का ही कहलाता है।

मैंने अम्मी को कभी सोते नहीं देखा

कलकत्ता के श्री मुनव्वर राणा उर्दू मुशायरों के सितारा शायरों में से एक हैं आपकी गिनती उन सुखनवरों में होती है जिन्होंने उर्दू शायरी को माशूका के पास से उठाकर माँ के पास बैठा दिया। मैंने उनसे पूछा कि आप इतने बड़े ट्रांसपोर्ट व्यवसायी होकर कैसे इतनी जमीनी बातें कह देते हैं, उनका कहना था कि मैं खुद जमीन का आदमी हूँ। मैंने इस शायरी को पहले भोगा है फिर लिखा है। वे कहते हैं जेठ की दुपहरी में हमारे टूटे हुए छप्पर में जब मेरी माँ मुझे टाट के पर्दे लगाकर धूप से बचाने की कोशिश करती थी, तो मुझे माँ में वह मुर्गी नजर आने लगती थी जो अपने चूजे को हर खतरों से बचाने के लिये अपने नाजुक परों में छिपा लेती है। माँ की मुहब्बत के आँचल ने मुझे तो हमेशा महफूज रखा लेकिन गरीबी की लपटों ने माँ के खूबसूरत चेहरे को साँवला कर दिया, उसका रंग मटमैला कर दिया।

वे कहते हैं कि जख्म कैसे भी हो कुरेदने में अच्छा लगता है। अतीत कैसा भी रहा हो सोचिये तो मजा आता है। बचपन कैसा भी गुजरा हो राजसिंहासन से अच्छा होता है। मुझे नहीं मालूम जमींदारी कैसी होती है क्योंकि मैंने तो अनेकों बार माँ को भूखे सोते देखा है। मुझे क्या पता जमींदार कैसे होते हैं क्योंकि मैंने मुद्दतों अपने अब्बू के हाथों में ट्रक का स्टेयरिंग देखा है। मुमकिन है मेरे अब्बू ने भी ख्वाब देखे हों क्योंकि एक थका माँदा ड्रायवर बहुत बेखबरी की नींद सोता है। लेकिन मुझे मालूम है मेरी माँ ने कभी ख्वाब नहीं देखे थे क्योंकि ख्वाब तो वे आँखे देखती हैं जो सोती हैं, लेकिन मैंने अम्मी को कभी सोते नहीं देखा।

वह माँ के लिये छप्पन पकवान है

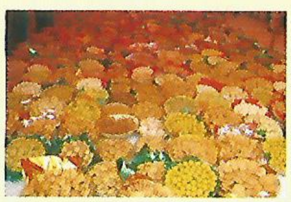

घर परिवार में बैठकर जब हम खाना खा रहे होते हैं तो हम कितना ही खा लें माँ कामना करती है कि संतान एक रोटी और खा ले। हमारी लाख ना-नुकुर के बावजूद भी वह हमें आधी रोटी के लिये तो मना ही लेती है। ''चल ज्यादा नखरे मत कर आधी रोटी ही ले ले।'' लेकिन माँ अपनी आधी रोटी भगवान जाने कौन से तराजू में तौलकर देती है कि उसके द्वारा बच्चों को परोसी गई आधी रोटी साइज में पौन रोटी से भी बड़ी ही रहती है। माँ तो वो है जो सदा खिला कर ही खुश होती है।

बचपन में एक दिन मैंने कटोरदान में शेष रह गयी दो रोटी देखकर माँ से पूछा था इन दो रोटियों से तेरा पेट भर जाएगा ? माँ का जवाब था बेटा माँ की भूख का कोई माप नहीं होता। अगर खाना कम है तो उसकी भूख कम हो जाती है और अगर ज्यादा बन जाए तो खाने को खत्म करने के लिये माँ की भूख बढ़ जाती है ताकि वह बेकार ना जाए। परिवार कितना ही धनी हो या गरीब, पूरे परिवार के खाना खा लेने के बाद जो बचा है वह माँ के लिये छप्पन पकवान है।

माँ ''हार्ट ऑफ द हॉऊस''

पति महोदय खाना खा रहे थे, पत्नी ने घर में बचा एकमात्र लड्डू पति को परोस दिया। परोसने की देर ही थी कि पीछे से उनका 6 साल का लड़का आकर लड्डू मांगने लगा। माँ ने कहा पिताजी से आधा ले ले। बच्चे ने प्रश्न किया आधा लड्डू क्यों लूं ? पिता ने कहा चल पूरा ले ले। बच्चे ने फिर प्रश्न किया जूठा क्यों लूं ? कहते-कहते बच्चा जोर से रोने लगा। मामला उलझ गया। माँ सारा तमाशा, आनंद लेते हुए देख रही थी। जब उससे नहीं रहा गया तो वह रसोई घर से एक खाली डिब्बा लेकर बाहर आई बेटे को किसी बहाने से एक मिनट के लिए बाहर भेज दिया। इसके बाद माँ ने फटाफट पति की थाली से लड्डू उठाकर उसके दो लड्डू बना लिये। एक वापस पति को परोस दिया दूसरा डिब्बे में रख लिया। बेटा जब वापस आया तो माँ ने डिब्बे में से दूसरा लड्डू निकालकर उसके हाथ में रख दिया। बेटा खुशी-खुशी पिता को मुँह चिढ़ाता हुआ लड्डू लेकर बाहर भाग गया।

पिता परिवार का अगर दिमाग होता है तो माँ परिवार का दिल होती है। पिता अगर हेड ऑफ द हॉउस है तो माँ हार्ट ऑफ हॉउस है और तय है दिमाग और दिल की द्वंद्व में देर-सवेर जीतता तो दिल वाला ही है।

दुनियाँ का उजाला

सुबह अखबार पढ़ते हुए चाय पीना मेरी दिनचर्या में शुमार हो गया है। अखबार चाय में तरावट ला देता है। कुछ माह पहले की बात है अखबार पढ़ते-पढ़ते चाय की प्याली थामा हाथ कँपकँपा गया। खबर कुछ यह थी - तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में 36 साल की तम्मी चेलवी ने पंखे से लटककर आत्महत्या कर ली। कारण यह था कि उसके दो बेटे कुमारन 17 वर्ष और मोहन 15 वर्ष दृष्टिहीन थे। चेलवी और उसके पति ने जी तोड़ कोशिश भी की, कि उनके बेटों को कहीं से आँखें दान में मिल जाएं। लेकिन कहीं बात नहीं बनी। माँ को सब्र कहाँ। अंधे बच्चों की तकलीफ देखते हुए उसका तो एक-एक दिन, साल के बराबर गुजर रहा था। उसने एक पत्र लिखकर फांसी लगा ली। उसकी अंतिम इच्छा थी कि उसकी दोनों आँखें निकाल कर उसके दोनों बेटों में बांट दी जाए। ताकि देख सकें उसके बेटे इस दुनिया का उजाला।

माँ

* मैंने एक मूर्तिकार से पूछा क्या तुम एक चमत्कार दिखलाओगे ?
माँ की मूरत बनाओगे ?
तो वह बोला-यदि कोशिश करूँगा तो सूरज को दीपक दिखाने जैसा अपराध कर जाऊँगा।
अरे जिसने खुद मुझे बनाया है, मैं क्या खाक उसकी मूरत बनाऊँगा।

* फिर मैंने एक चित्रकार से कहा - तुम तभी चित्रकार कहलाओगे,
जब माँ की तस्वीर बनाओगे ?
तो उसने कहा - मैं तो स्वयं दुनिया के कैनवास पर
माँ द्वारा बनाई तस्वीर हूँ मित्र।
मैं कैसे बनाऊँगा उसका चित्र।

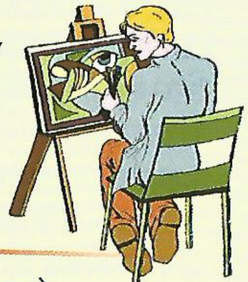

* तब मैंने संगीतकार से कहा - तुम्हीं अपने संगीत का जादू दिखालाओ,
कोई नई तान, नया गान छेड़कर माँ का आभास कराओ।
तो वह बोला जिसने मुझे दी है आवाज और सातों स्वर,
मैं असमर्थ हूँ कि उसका आभास कर पाऊँगा मुखर।

* फिर मैंने एक नर्तक से कहा - कि तुम्हारे नृत्य में निश्चित होगी ऐसी महिमा,
जो प्रस्तुत कर सके माँ की भंगिमा।
तो वह बोला जिसने मुझे अंगुली पकड़कर चलना सिखाया है,
ये बंदा आज तक उसकी भंगिमाएं नृत्य में नहीं उतार पाया है।

* अंत में मैंने एक कवि से कहा तुम तो शब्दों के शिल्पकार हो,
कल्पनाओं के राजकुमार हो,
तुम्हीं कोई चमत्कार दिखलाओ, हो सके तो माँ पर कोई कविता बनाओ,
तो वह बोला माँ, माँ, माँ।
मैंने कहा - यह तो शीर्षक है कविता कहाँ ?
तो वह बोला माँ तो हर उपमाओं की सीमाओं से ऊपर है,
उसका स्थान तो हर व्यक्त के हृदय पर है,
और जो माँ की महिमा का वर्णन करे ऐसा न कोई कवि है न काव्य है,
अरे ''माँ'' शब्द ही एक सम्पूर्ण महाकाव्य है।

यूं बदलता है नजरिया

चार वर्ष की आयु में	-	मेरे पिता महान हैं।
छः वर्ष की आयु में	-	मेरे पिता सब कुछ जानते हैं।
दस वर्ष की आयु में	-	मेरे पिता बहुत अच्छे हैं , लेकिन गुस्सा बहुत जल्दी होते हैं।
तेरह वर्ष की आयु में	-	मेरे पिता बहुत अच्छे थे, जब मैं छोटा था।
चौदह वर्ष की आयु में	-	पिता बहुत तुनकमिजाज होते जा रहे हैं।
सोलह वर्ष की आयु में	-	पिताजी जमाने के साथ नहीं चल पाते हैं, बहुत पुराने खयालाती हैं।
अठारह वर्ष की आयु में	-	पिताजी तो लगभग सनकी हो चले हैं।
बीस वर्ष की आयु में	-	हे भगवान, अब तो पिताजी को झेलना बहुत मुश्किल होता जा रहा है , पता नहीं माँ उन्हें कैसे सहन का पाती हैं।
पच्चीस वर्ष की आयु में	-	पिताजी तो मेरी हर बात का विरोध करते हैं।
तीस वर्ष की आयु में	-	मेरे बच्चे को समझाना बहुत मुश्किल होता जा रहा है, जबकि मैं अपने पिता से बहुत डरता था, जब मैं छोटा था।
चालीस वर्ष की आयु में	-	मेरे पिता ने मुझे अच्छे अनुशासन के साथ पाला। मुझे भी अपने बच्चे के साथ ऐसा ही करना चाहिए।
पैंतालीस वर्ष की आयु में	-	मेरे पिता ने हमें यहाँ तक पहुँचाने के लिए बहुत कष्ट उठाए, जबकि मैं अपनी औलाद की देखभाल ठीक से नहीं कर पाता।
पचपन वर्ष की आयु में	-	मेरे पिता बहुत दूरदर्शी थे और उन्होंने हमारे लिए कई योजनाएँ बनाई थीं। वे अपने-आप में बेहद उच्च कोटि के इंसान थे, जबकि मेरा बेटा मुझे सनकी समझता है।
साठ वर्ष की आयु में	-	वाकई मेरे पिता महान थे।

मेरा कोई बेटा और तेरा कोई पिता नहीं है

हमारे समीप के एक गाँव में एक निमाड़ी बुजुर्ग सदैव मेरे पास आते रहते थे। परिश्रमी और हंसमुख, वो कास्तकार समृद्ध होकर भी सादगीप्रिय थे। वे अपनी बातचीत में घुमा-फिरा कर अपने बेटे को जिक्र अवश्य ले आते थे। उनका लाड़ला भोपाल में किसी बैंक में उच्च अधिकारी था। ... मेरे बेटे का तो नाम चलता है, गजब के ठाठ-बाट है, गाड़ी और ड्रायवर भी है, राज कर रहा है ....., आदि सुन-सुनकर मेरे और स्टाफ के कान पक गये थे।

पिछले कुछ समय से वे आ तो नियमित रहे थे पर उनके मुँह से बेटे का महिमा गान बंद हो गया था। एक दिन मैंने यूं ही छेड़ दिया-दरबार, जय ओंकारजी की .... आजकल अपने कुँवर साहब के क्या हालचाल हैं ? सुनकर उनका चेहरा लाल हो गया और आँखों से गंगा-जमना बहने लगी। उन्होंने जो बयान किया मुझसे तो नहीं लिखा जाएगा, आप उन्हीं की भाषा में उन्हीं की जुबान से सुनिये ...

पाछला महिना म म्हारा बेटा को जन्मदिन थो। ओकी माय न घर सी लड्डू अरू घर को बणेल घी एक पोटली म बाँधी, न मख दियो। बेटा का जन्मदिन म रात म कोई 8 बजे भोपाल उका घर म पहुँच्यो। उना दरवाजा पर जब घंटी बजाई चपरासी दौड़ीन आयो। चपरासी नयो थो। पूछने लग्यो ''आप कौन हैं ? साहब अंदर है पर जन्मदिन की पार्टी चल रही है।'' मनऽक्यो-थारा साहब सी बोल कि गाँव से पिताजी आयल है, चपरासी अन्दर जाय के वापस आयो अरू बोल्यो - ''आप उस सामने वाले कमरे में जाकर आराम कीजिये।''

हंउ जब पोटली अरू सामान उठाय के अंगना म सी जाने लग्यो तो म्हारा कान ण म आवाज आई। कोइ म्हारा बेटा सी पूछी रह्यो थो - ''ये बूढ़ा कौन है'' बेटा न उख कह्यो - ''मेरी मिसेस को घर के काम में परेशानी होती थी इसलिये पिताजी ने गाँव से नौकर भेजा है।'' अख सुनिकर आसो लग्यो जस कोइ न म्हारा कान न म पिघलो शीशो उंडेल दियो। हंऊ एक मिनट रूक्यो बिना वापस पलटी गयो। चपरासी सामने, खड़्यो थो। म्नह उस कयो-तेरे साहब बहादुर से कहना कि इसी क्षण से वह यह मान ले कि उसका बाप मर गया है।'' और मैंने तो यह मान ही लिया है कि मेरा कोई बेटा नहीं है। घटना सुनाते-सुनाते उस बुजुर्ग की रोते हुए घिग्गी बँध गयी।

दुर्भाग्य देखिये छह माह ही बीते थे कि अचानक एक दिन भोपाल से खबर आई कि उसके अधिकारी बेटे का एक दर्दनाक सड़क दुर्घटना में निधन हो गया। वो पिता जिसकी पिछले छह महीने से बेटे और बेटे के परिवार से वार्तालाप बंद थी। जो यह कह चुका था कि मेरा कोई बेटा और तेरा कोई पिता नहीं है। ... इस घटना से उनका दिल तो हिल ही गया, पिता तो आखिर पिता ही होता है। उसने बहू की अनुकम्पा नियुक्ति लगवाने से लेकर उसके परिवार की सारी जवाबदारियाँ निभाईं और बहू और पोते-पोतियों की सेवा करते-करते भोपाल के उसी मकान में अपने प्राण त्याग दिये जिसकी दहलीज कभी न चढ़ने की उसने कसम खायी थी।

माँ की प्रसन्नता

चीन में पुराने जमाने में एक विलक्षण मातृभक्त हो गया। उसका नाम था होलिन। माँ के प्रति उसकी भक्ति श्रवण जैसी ही एकनिष्ठ थी। दिन रात केवल माँ की सेवा करना यही उसकी जीवन व्रत था।

एक रात की बात है। उसके घर में ही एक चोर घुस बैठा। होलिन और उसकी माँ गहरी नींद में थे। चोरी करने आये हुए चोर ने विचार किया कि अगर इस नौजवान की नींद खुल जाएगी तो उसका सारा काम ही चौपट हो जाएगा। सोचकर उसने एक तरकीब खोज ली। उसने खंजर की नोक बतलाकर सोते होलिन को सावधानी से जगाया, फिर उसे नजदीक ही पड़ी कुर्सी की डोर से कसकर बांध दिया। फिर उसने अपना काम शुरू किया। घर के ठीक बीचो बीच उसने एक चद्दर बिछायी और आहिस्ता आहिस्ता अच्छी और मूल्यवान घर की चीज बटोरकर चद्दर में डालना शुरू किया।

इधर बेबस होलिन मौन रहकर देख रहा था। घर की कीमती चीजें उठाने के बाद चोर छोटी-छोटी चीजें बटोरने लगा, उन चीजों में एक कडाही भी थी। अब तक चुपचाप रहा होलिन अचानक कह उठा, ''भाई ! तुम्हें जो चाहिए वे सब चीजें तुम उठा ले जाओ, लेकिन मेहरबानी करके वह कडाही मत ले जाना, उसे रहने दो।'' होलिन की यह बिनती सुनकर चोर अचंभे में पड़ गया। उसने पूछा, ''अरे ! इतनी कीमती चीजें मैंने उठा ली, तुमने उफ तक नहीं किया और इस तुच्छ वस्तु के लिए तुम मना क्यों करते हो ? होलिन ने शांति से जवाब दिया, ''उसका एक ही कारण है। इन सभी कीमती वस्तुओं के बिना मैं अपनी जिंदगी चला सकता हूँ लेकिन इस कड़ाही के बिना बिलकुल नहीं, क्योंकि हर रोज सुबह सबसे प्रथम मैं मेरी प्यारी माँ के लिए काँजी बनाता हूँ। अब तुम ही बताओ कि सुबह मैं राबड़ी किसमें बनाऊँ ?''

पत्थर दिल चोर भी होलिन की विशाल तथा उत्कट मातृभक्ति देखकर दंग रह जाता है। उसके हृदय में सुप्त रूप में रहने वाला राम जाग गया। मानों वह कहने लगा, ''ऐसे मनुष्य की कीमती चीजें चुराकर किस भव में मैं पाप से मुक्त हो जाऊँगा ?'' उसने तुरन्त ही होलिन को बंधमुक्त किया। सद्गदित स्वर में उसने कहा, ''भाई ! मुझे माफ करना। तुम्हारे जैसे महात्मा का माल मुझे कभी भी हजम नहीं होगा।'' इतना कहकर घर से बाहर जाने के लिए कदम उठाया किन्तु होलिन ने उसे रोककर कहा, ''नहीं भाई ! तुम ये बाकी सारी चीजें ले जाओ। मुझे तो मेरी माँ के लिए सिर्फ कड़ाही की जरूरत है। तुम खाली हाथ जाओगे तो तुम्हारी यह सारी मेहनत असफल हो जाएगी और तुम्हारी माँ निराश हो जाएगी। इसलिए अपनी माँ को खुश करने के लिए तुम ये सारी चीजें ले जाना। तुम्हारी माता की प्रसन्नता से मुझे और माँ को जरूर आनंद होगा। कडाही रखने से मेरी माँ खुश होगी और बाकी चीजों से तुम्हारी माँ प्रसन्न होगी। हम दोनों की माताएँ प्रसन्न होगी तो इसमें क्या बुरा है ?'' चोर की आँखों में आँसू उमड़ने लगे। होलिन को प्रणाम करके वह उस घर से खाली हाथ ही लौट गया। लेकिन उसका मन भरा हुआ था।

– मातृदेवो भव

तोडर

डॉ. तोडरमल की माँ उनको हमेशा 'तोडर' कहकर ही बुलाया करती थी। डॉक्टर साहब को माँ का यह एकवचनी संबोधन पंसद नहीं था। समाज में सारे लोग उनको बहुत ही आदर सम्मान के साथ बुलाते थे, और माँ उनको तोडर कहकर पुकारें, यह डॉक्टर साहब को अच्छा नहीं प्रतीत होता था। आखिर एक दिन उन्होंने अपनी माताजी से कहा, ''माँ ! सभी लोग मुझे मान सम्मान से बुलाते रहते हैं और तुम मुझे इस तरह पुकारती हो, यह मुझे ठीक नहीं लगता।''

इस बात को सुनकर माँ ने भाप लिया कि बेटे के मन में बडाई का भाव प्रविष्ट हो चुका है। इसलिए बेटे की आँखें खोलने के लिए उसने एक तरकीब सोच ली। माँ ने बेटे से कहा, ''अगर, तुम एक रात के लिए मेरे पास सो लेगा, तो मैं तुम्हें सम्मान से बुलाती रहूँगी।'' डॉक्टर ने स्वीकार किया।

रात को बारह बजे माँ ने पानी के ग्लास की माँग की। डॉक्टर ने हिचकिचाते हुए पानी का ग्लास दिया। माँ ने आधा ग्लास पानी पी लिया और बाकी पानी गद्दी पर उंडेल दिया। यह देखकर डॉक्टर चकरा गया, और उसने पूछा, ''अब मैं इस गद्दी पर कैसे सो पाऊँगा ?'' मौका पाकर माँ ने कहा, ''बेटे ! तुम जब छोटे थे, तो इसी तरह कितनी बार पेशाब करके अपनी गद्दी खराब किया करते थे। लेकिन मैंने मुँह से कभी उफ् त क नहीं किया। मैं तो उसी गद्दी पर सोती थी। तुम उन सारी बातों को भूल गये और बढ़ाई की अपेक्षा रखते हो।'' माँ की बातों को सुनकर डॉक्टर साहब की आँखे खुल गयी। उनके होश ठिकाने आ गये।

– मातृदेवो भव

दो भगवान = एक माता

किसी पत्रकार ने गणित के एक शिक्षक को प्रश्न किया। गणित की भाषा में माता का मूल्य कितना है ? शिक्षक ने प्रश्न का विस्तृत उत्तर दिया।

वाल्मिकी ऋषि ने एक करोड़ श्लोकों से युक्त रामायण की रचना पूरी कर दी। इसका पूर्ण पुण्य प्राप्त करने के लिए देव, दानव और मानव भगवान शंकर के पास दौड़कर जाते हैं। भगवान शंकर तीनों को 33/33 लाख का पुण्य देते हैं। अब एक लाख श्लोक बचते हैं। तीनों फिर से इन एक लाख श्लोकों से पुण्य की माँग करते हैं, तो तीनों का शंकरजी 33/33 हजार का पुण्य दे डालते हैं। फिर से एक हजार श्लोकों के पुण्य माँगने पर तीनों को 333/333 श्लोकों का पुण्य बाँट दिया जाता है। एक श्लोक बच जाता है, उसके भी पुण्य की तीनों माँग करते हैं। एक श्लोक में कुल 32 अक्षर थे। तीनों को 10/10 अक्षर बाँट दिये जाते हैं। केवल दो ही अक्षर बचते हैं ..... ''राम'' शंकर ने कहा, ''इन दो अक्षरों का पुण्य मेरा।'' तीनों कहते हैं ''पुरी रामायण में से राम अलग हो जाये तो बाकी रहे तो क्या और ना रहे तो क्या ?''

शिक्षक ने बात को बढ़ाते हुए कहा, 'राम' के अक्षरों का जोड़ 6॥ होता है, तब माता के अंकों का जोड़ 13 होता है, याने दो राम बराबर याने कि **– दो भगवान = एक माता।**

तुमने मेरी नींद खराब कर दी

अपनी पत्नी के बहकावे में आकर एक युवक ने अपनी माँ को वृद्धाश्रम में भेज दिया। तीन चार महीनों बाद की बात है। एक रात को वृद्धाश्रम में माँ की आँखें अचानक खुल जाती है। अपने एकमात्र बेटे के सुख शांति के लिए उसने जो मुसीबतें उठायी थी, जिन कष्टों को सह लिया था, उन सभी बातों के स्मृतिचित्र उसके मनःपटल पर एक के बाद एक, अंकित होने लगे। उसकी आँखें आँसुओं से डबडबा आयीं। वह सिसकियाँ लेकर रोने लगी। उसके मन को सांत्वना देने वाला भी कोई वहाँ नहीं था। अतः कुछ उथल पुथल के बाद मन अपने आप आधे घंटे के बाद स्वस्थ हुआ। उसने अपने कमरे में बिजली जलायी। मुँह पर पानी फेर दिया। पलंग पर बैठ गयी। अचानक उसकी नजर सामने की दीवार पर लटकते कैलेंडर पर गयी। उसकी आँखें चमक उठी। उसकी स्मृति जागृत होती है। ओह ! तीस वर्ष पहले आज ही के दिन और रात के समय मैंने मेरे लाड़ले लाल को जन्म दिया था। मन में भावनाओं का एक तूफान उठता है, उसे वह रोक नहीं पाती, क्योंकि आखिर वह एक माँ थी। प्रेम का सागर थी। वह पलंग पर से उठती है। कमरे में एक कोने में टेलीफोन था। उसने रिसीव्हर उठाया, डायल घूमा दिया। दूसरी ओर से बेटे ने फोन उठाया, पूछा ''कौन?''

''बेटा ! मैं हूँ, तुम्हारी मम्मी !''

''लेकिन माँ ! इतनी देर रात को तुझे फोन करने की क्या जरूरत थी?''

''बेटे ! वैसे जरूरत तो नहीं थी। लेकिन, तीस वर्ष पहले आज ही की तारीख को मैंने तुझे जन्म दिया था, यह बात मुझे याद आयी, और इसलिए तुझे आशीष देने के लिए मैंने तुझे फोन किया था।''

''शुभाशीष तो तुम मुझे सुबह भी दे सकती थी। उसके लिए रात को तीन बजे यह नाटक करने की तुझे क्या जरूरत थी।''

''बेटे ! तुम्हारे प्रति मेरी आस्था को नाटक कहने का पाप मत करना। तुम्हारे लिए जो तीव्र प्रेमभाव मेरे मन में हैं, उसी कारण ही मैंने तुम्हें फोन किया था।''

''लेकिन तुझे पता है ? इस वक्त फोन करके तुमने मेरी नींद खराब कर दी है?''

''बेटे ! यह बात बिलकुल सच है कि मेरे इस वक्त फोन करने से तेरी नींद बिगड़ गयी है। लेकिन तीस साल पहले जब मैंने तुझे जन्म दिया था, उस समय तो मेरी पूरी रात ही बिगड़ गयी थी। याद है तुझे ?'' इतना कहकर माँ ने रोते-रोते फोन रख दिया।

– दो कदम, विस्मरण से स्मरण की ओर

एक कविता में भी ...
कोई तो हैं ...

बचपन की सर्द रातों में,
होते ही ठंड का अहसास,
कोई ओढ़ा जाता है मुझे रजाई,
और मुझे आ जाती है नींद सुहानी
हर रात-हर बार।
सफर की तैयारी करते-करते
लाख मनाही के बावजूद
रख देता है कोई एक डिब्बा,
रास्ते में पेट कुलबुलाते ही
मिटा देते हैं मेरी भूख
उसमें रखे पराठे और अचार।
जीवन में विषमता आने पर
जब बंद नजर आये सारे रास्ते,
तभी रख गया कोई मेरे वास्ते
कुछ मुडें-तुड़ें नोट, जेवर, एफ.डी.आर.
और कर गया जीवन में अतुल उपकार।
कुटुम्ब में साथ रहते-रहते
जब फटने लगी प्रेम की चादर,
तभी कोई आया सुई-धागा लेकर
और जोड़ गया फिर से, पूरा परिवार।
बीमारी में, मेरी लाचारी में
जब हार चुका सारी हिम्मत,
कोई आया और सिर सहला कर
कर गया मुझमें ऊर्जा संचार।
कोई शक्ति तो है ...
जो बैठी है मेरे ही घर में,
और मैं मूरख-नादान
ढूंढ रहा हूँ उसे
मंदिर-मस्जिद और
गुरुद्वारे-गिरजाघर में।

– आलोक सेठी

जीवन भर

खटते रहे पिता
इसलिए कि -
उनके बच्चे गली-गली के न हो जाएं
और
अब जब बच्चे बड़े हुए
अपने पैरों पर खड़े हुए
पिता -
गली-गली के हो गए
माँ-बाप को सोने से न मढ़ो तो चलेगा।
हीरे से न जड़ों तो चलेगा पर उसका जिगर जले
और अंतर आंसू बहाये, वो कैसे चलेगा।

– अशोक वाजपेयी, खण्डवा

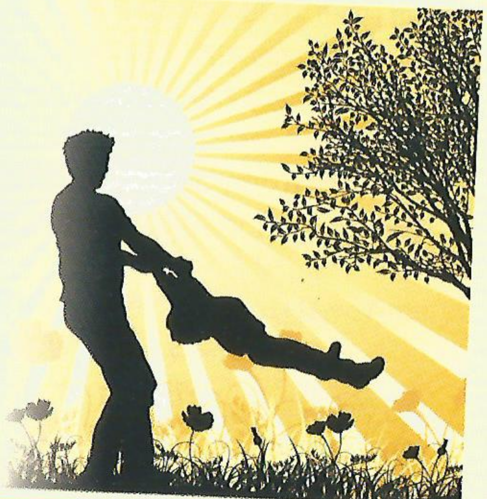

माँ-बाप असमर्थ हैं ...

पिता की कमी को कोई बाँट नहीं सकता
ईश्वर भी पिता के आशीष को काट नहीं सकता।
विश्व में किसी भी देवता का स्थान दूजा है
माँ-बाप की सेवा ही सबसे बड़ी पूजा है।
विश्व के किसी भी तीर्थ की सेवा व्यर्थ है
यदि बेटे के होते माँ-बाप असमर्थ हैं।

2014 के रतलाम नगर की चातुर्मास झलकियाँ

1. जलगाँव से उग्र विहार कर 30 जून को रतलाम प्रवेश पर तीनों संतों का तेला।
2. स्थानक प्रवेश पर तीनों संतों का बेला।
3. भाई-बहन में अलग-अलग तेले की लड़ी - लाभार्थी कांतिलाल मंडलेचा परिवार।
4. राजेन्द्र मुनि का मासखमण।
5. विजयमुनि की 8, 9 एवं पचोले चोले की तपस्या कुल 30 पारणें।
6. राजेश मुनि के कुल 40 पारणें।
7. प्रवचन के दौरान भारी संख्या में श्रोतागण।
8. अनेकों के द्वारा रात्रि भोजन, जमीकंद का त्याग।
9. सोहनलालजी रूनवाल, ज्ञानचंदजी लोढ़ा ने सुबह नियमित आकर प्रतिक्रमण सीखने का लक्ष्य रखा।
10. राजेश बोरदिया ने प्रतिक्रमण शुद्ध कंठस्थ किया।
11. श्रावण वदी नवमी सौभाग्य गुरु की तिथि पर 100 से अधिक तेले।
12. आनंदऋषि जन्म जयंति पर 74 बेले।
13. एकासन मासखमण 60 से अधिक।
14. सुजानमलजी मेहता दीवेलवाला द्वारा लगातार एकासन के दो मासखमण
15. हर शनिवार युवकों द्वारा संवर जिसमें 45 के लगभग संख्या में लाभ लिया गया।
16. 1008वें अभिग्रह की पूर्ति पर 4000 से अधिक एकासन मुख्य लाभार्थी श्रीसंघ अध्यक्ष आजादकुमारजी मेहता परिवार चेन के ड्रा लाभार्थी प्रेमलता प्रकाश मूणत परिवार।
17. 408 तेले एक साथ - लाभार्थी आजादजी मेहता परिवार।(प्रायश्चित के तेले)
18. सागरमलजी चत्तर एवं मूलचंदजी चौपड़ा, धरमजी चत्तर द्वारा 4 माह संवर की आराधना।
19. 12 दिवसीय आराधना।
20. 27 दिवसीय आराधना।
21. कर्फ्यू में भी लगभग 40 के द्वारा गोचरिदया।
22. पटाखों के पच्चक्खाण 1000 से अधिक बच्चों द्वारा।
23. 15 दिन पुच्छिंस्सुण जाप में 300 से अधिक जापकर्ता की उपस्थिति।
24. ओलीजी सानंद संपन्न।
25. दया का मासखमण - शांता मालवीय द्वारा।
26. सुखविपाक सूत्र कंठस्थ किया, चार जनों ने।
27. प्रतिक्रमण 10 से अधिक व्यक्तियों द्वारा कंठस्थ किया गया।
28. संवत्सरी को 550 से अधिक पोषध आराधना।
29. रीना अतुल दख के मासखमण का भव्य वरघोड़ा पहली बार।

30. रक्षाबंधन पर भाई-बहन का जोड़े से जाप।
31. अभिग्रह में सुबह भव्य उपस्थिति।
32. पर्युषण में 8 दिन अखंड जाप।
33. नौ दिवसीय एकासन आराधना 90 व्यक्तियों द्वारा।
34. ''क्या आप स्वतंत्रता चाहते हैं'' Open Book Exam में 400 के लगभग प्रतियोगियों ने लाभ लिया।
35. पारस पीयूष माला भाग 4 की ओपन बुक एक्जाम।
36. किरण अमृत मूणत द्वारा परदेशी राजा का तप।
37. चार जोड़ो द्वारा आजीवन शीलव्रत ग्रहण किया गया।
38. 3 पुस्तकें ''नानीबाई'' ''सोते हुए सवेरा'' अभिग्रह का प्रकाशन।
39. 60 से अधिक अठाई एवं नौ की तपस्या।
40. आजादजी मेहता श्रीसंघ अध्यक्ष द्वारा तपस्वीयों को 10 ग्राम, 20 ग्राम, 100 ग्राम चाँदी के सिक्के से सम्मान।
41. चौबीसी में 2-4 में 1200 से अधिक जाप वाले उपस्थित थे। संघ के गणमान्यों द्वारा (आजादजी मेहता, प्रकाशजी मूणत, रखब चत्तर, सौ. वर्षा विनोदजी पितलिया, सुमन राठौड़, पंकज कटारिया, चंदा मूणत, विपिन पुंगलिया, जयंतिलालजी मेहता, विकास पितलिया द्वारा मंचन)
42. आजादबेन मेहता, सौ. वर्षा विनोदजी पितलिया, ललिता मनीष मूणत, मोना राजेश बोरदिया द्वारा सुख विपाक, संध्या विकास पितलिया द्वारा दशवै याद किया गया।
43. राजमल चौपड़ा बाबू गाँधी (सुनिल) द्वारा पाठशाला संचालन।
44. पटाखे वालों को सौभाग्य सूर्य अणु नवयुवक मंडल द्वारा हजारों के पुरस्कार के साथ ड्रा में दो सायकिल प्रदान की गई।
45. स्कूलों में जाकर प्रवचन दिये गये।
46. ओपन बुक में प्रथम- मोना सुशील चपडोद, श्रद्धा प्रमोद छाजेड़, जावरा।
47. रानी पितलिया, रुचि मूणत, नेहा सकलेचा, राजेश बोरदिया, ज्ञानचंद लोढ़ा, निराली भंडारी द्वारा प्रतिक्रमण कंठस्थ।
48. रंगलालजी चोरड़िया द्वारा मच्छरदानी संवर करने वालों को ड्रा में स्वर्ण अंगूठी।
49. जयंतिलालजी मेहता द्वारा पच्चक्खाण की अंगूठी।
50. पर्युषण में 8 दिन ध्यान मांगलिक - प्रभावना ड्रा - नवयुवक मंडल रतलाम द्वारा।
51. जयप्रभा मगनलालजी रूनवाल द्वारा चारों माह एकासन।
52. 23-10-2014 दीपावली निर्वाण दिवस पर रात्रि 12 बजे 1000 श्रोतागण द्वारा मांगलिक श्रवण किया।
53. श्रीमती लीलाबाई भंडारी रतलाम एवं सुमित दिनेश लोढ़ा बाँसवाड़ा द्वारा दो गोदरेज अलमारी पुस्तकालय को भेंट।
54. ज्ञान पंचमी के दिन को पाठशाला दिवस घोषित किया एवं उसमें प्राप्त समस्त सहयोग राशि का प्रयोग पाठशाला में ही किया जावेगा।

कार्यक्रम

20-7-14	समाधि स्थल पर गुणानुवाद सभा
लाभार्थी	श्री संघ द्वारा
	तेले की प्रभावना **भाग्यशाली–** सुरभि गादिया
लाभार्थी	श्री संघ द्वारा
19-7-14	चौबीसी (ड्रा स्वर्ण अंगूठी गुप्तदाता द्वारा) **भाग्यशाली–**सागरमलजी चत्तर
लाभार्थी	महिला मंडल द्वारा
27-7-14	चौबीसी (ड्रा स्वर्ण अंगूठी) **भाग्यशाली–**आशी छजलाणी, लीला पुष्पक ओस्तवाल परिवार
लाभार्थी	बहू मंडल द्वारा
8-8-14 से	27 दिवसीय आराधना - सौ. वर्षा विनोद पितलिया - प्रथम चंदा अरुण मूणत-द्वितीय, वर्षा अभिषेक कटारिया-तृतीय विपिन कांतिलाल पुंगलिया-तृतीय (अन्य 58 को पुरस्कार) **भाग्यशाली–**भंवरलाल मूणत (पुणवान परिवार)
लाभार्थी	मिश्रीमल वागरेचा परिवार (स्वर्ण अंगूठी) मेघनगर, किरणबाला इन्दरमलजी चौपड़ा, चाँदमलजी दख करेणीवाला परिवार, निर्मल हिरालालजी मूणत, राजमलजी चौपड़ा, शांतिलाल जयंतिलालजी मेहता
23-25 अग.	तेला-स्वर्ण अंगूठी ड्रा - **भाग्यशाली–**भंवरजी मूणत
लाभार्थी	आजादजी मेहता परिवार
30-8-14	पौषध आराधना स्वर्ण अंगूठी ड्रा - **भाग्यशाली–** सौम्य विपिन पुंगलिया
लाभार्थी	संघ एवं आजादजी मेहता, ड्रा तेजमल मूणत परिवार
लाभार्थी	प्रियंका रोड़ लाइंस
3-9-14	सपरिवार प्रवचन सामायिक **भाग्यशाली–**चंदा अरुण मूणत
5-9-14	जाप ड्रा - चांदी कलश-महिला मंडल द्वारा-भाग्यशाली किरण अशोक मांडोत
लाभार्थी	प्रभावना - सुमन अमृत राठौड़
6-9-14	5-5 सामायिक चाँदमल दख परिवार
7-9-14	गोचरी दया
लाभार्थी	अमृत विनोदजी मूणत
8-9-14	उपवास दिवस
लाभार्थी	अरविंदजी मेहता
9-9-14	प्रतियोगिता
लाभार्थी	लोकेश हीरालालजी मेहता

10-9-14 दर्शन दिवस

लाभार्थी वर्धमान विकासजी पितलिया

11-9-14 (300 एकासन स्थानक में हुये) रंग बिरंगे एकासन

लाभार्थी जयंतिलाल मेहता, बसंतीलाल पितलिया, मांगीलाल मूणत, पुंगलिया परिवार, राजेश जी बोरदिया, अभय पितलिया, कांताबेन चोरड़िया, सुनिल गाँधी, चंदा अरुण मूणत, अभयजी मोदी, चंदनमलजी मूणत परिवार, राजेश भंडारी, विकास पितलिया, पंकज कटारिया, मणिलालजी कटारिया, रंगलालजी चोरड़िया

23 से 30-8 अठाई लाभार्थी-गुप्त हस्ते सचिन मांडोत

भाग्यशाली-रीना अतुल दख

12-9-14 ओपन बुक परीक्षा

लाभार्थी जयंतिलालजी मेहता

13-9-14 संवर दिवस

लाभार्थी श्रीपालसचिन मांडोत

14-9-14 एकासन दिवस-4000 से अधिक, चेन ड्रा-प्रेमलता प्रकाशजी मूणत द्वारा, **भाग्यशाली-**कुसुमलता पितलिया, प्रभावना-पुंगलिया परिवार

लाभार्थी श्री संघ एवं आजादजी मेहता, अध्यक्ष

15-9-14 अभिग्रह प्रभावना

लाभार्थी अनिलजी कोठारी, हस्ते सचिन डोशी

16-9-14 चौबीसी स्वर्ण अंगूठी ड्रा - विनोदजी बाफना, मेघनगर

लाभार्थी नरेन्द्रकुमार संदीप कुमार छाजेड़

18-9-14 **भाग्यशाली-**टाटानगर वाली, एकासन मासखमण व नव एकासन

लाभार्थी चंदनमलजी मूणत परिवार

20-9-14 मालव केशरी प्रश्न मंच

लाभार्थी -प्रेमलता प्रकाशजी मूणत

10-10 से 24-10 तक पुच्छिंस्सुणं जाप-ड्रा स्वर्ण अंगूठी, श्री कुसुम सूरजमलजी पितलिया प्रभावना- (सुमितजी) **भाग्यशाली** प्रतिभा अश्विन मेहता, चाँदी के सिक्के - गुप्तदाता द्वारा, हस्ते-लता विकास पितलिया

लाभार्थी कमलाबाई दीपचंद गाँधी, वर्धमान पितलिया, सोहनलाल रूनवाल, ज्ञानचंद लोढ़ा, जयंतिलाल मेहता, मूलचंद चौपड़ा, विजय पटवा, श्रीपाल मांडोत, राजमल चौपड़ा, सुनिल गादिया, चंदन मूणत, लोकेश हिरालाल मेहता, पूनमचंदजी मूणत, निर्मलजी मूणत

25-10-14 भाई बहन दर्शन दिवस

26-10-14 प्रश्न मंच - जयंतिलाल मेहता, लोकेश मेहता, विकास पितलिया एवं साहित्य बिक्री से। प्रथम-सौ. अंकिता अपूर्वजी पिरोदिया, द्वितीय-श्री. ईशा नरेन्द्रजी गाँधी, तृतीय-सौ. वर्षा विनोदजी पितलिया

26-10-14 (ड्रा अंगूठी सोने की) गोचरीदया ड्रा-गुप्तदाता, **भाग्यशाली-** अभयजी शैतानमलजी मोदी प्रभावना- सुजानमलजी मेहता

27-31 अक्टू. वरण एकासन-ड्रा चाँदी ग्लास - धरमजी चत्तर द्वारा

भाग्यशाली-
1. चंदनबाला मेहता
2. रुपल मेहता
3. रुचि सुरेश मुणत
4. ललिता मेहता
5. टीबुबाई भेरुलाल गादिया

लाभार्थी अमृत हजारीमलजी मूणत (विनोद मूणत) (वरण एकासना)

1-11-14 संवर दिवस - स्वर्ण अंगूठी ड्रा, **भाग्यशाली-** प्रवीण मूणत

2-11-14 पैदल यात्रा - जयंतिलालजी मेहता, रंगलालजी चौरड़िया, रमेशजी समरथमलजी चोरड़िया द्वारा संघ यात्रा-रास्ते में 18 जगह प्रभावना, युवक मंडल द्वारा स्वल्पाहार।

3-11-14 लोगस्स जाप - श्रीपाल मांडोत

4-11-14 रंगीला एकासन, कमलाबाई दीपचंद गाँधी, मंजू भंडारी, लोकेश मेहता, निर्मलजी मूणत, मूलचंदजी चौपड़ा, मनोजजी पितलिया, पूनमचंदजी मूणत, पंकज कटारिया, विकास पितलिया, यशवंतजी मूणत, हीरामणी अमृत भरगट द्वारा, राजमलजी चौपड़ा, मणीलाल कटारिया, अभिषेक कटारिया, प्रेमलता मांडोत, कांता शांतिलाल भरगट, उषा सुरेश मूणत, ममता राजेन्द्र बोहरा, पवनजी गाँधी, सौ.सुमन अमृतलालजी राठौड़, विजयजी पितलिया, सुजानमलजी मेहता।

5-11-14 5-5 सामायिक - चाँदमलजी दख (करेणी वाला)

6-11-14 संवर पौषध उपवास दिवस

7-11-14 विहार दिवस - लोकेश हीरालालजी मेहता

एकासना मासखमण

1. कु. प्राची मूणत
2. कु. ईशागांधी
3. श्रीमति शकुंतला चत्तर
4. कु. शांताबहन राठौड़
5. कु. मानकुंवर राठौड़
6. सौ. स्नेहलता सैलोत
7. अस्मिता राकेश गांधी
8. कु. मंजू मूणत
9. सौ. पुष्पा नाणेचा
10. सौ. मधुपटवा
11. सौ. आशा छाजेड़
12. सौ. कल्पना चौरड़िया
13. श्रीमती रोशन बाई चोरड़िया
14. श्रीमती प्रमीला बहन रांका
15. श्रीमती कोयल मेहता
16. श्रीमती मानकुंवर कटारिया
17. सौ. वर्षा कटारिया
18. सौ. कविता पितलिया
19. सौ. कांता पितलिया
20. सौ. साधना मेहता
21. सौ. सपना गांधी
22. सौ. किरण बोहरा
23. सौ. सुशीला भंडारी
24. सौ. चंदनबाला बोहरा
25. सौ. संगीता भंडारी
26. सौ. इन्दिरा कटारिया
27. सौ. कांता बहन चौरड़िया
28. सौ. रचना चौरड़िया
29. सौ. अरुणा मेहता
30. सौ. चन्द्रकांता चत्तर
31. सौ. कमला चौपड़ा
32. सौ. विद्या मेहता
33. सौ. कांता भरगट
34. सौ. टिबु गादिया
35. सीमा मूणत
36. मोना बोरदिया
37. श्वेता बोहरा
38. मोनिका मेहता
39. दमयंती चौरड़िया
40. श्री प्रवीण मूणत
41. श्री कमल चौरड़िया
42. श्री पंकज कटारिया
43. श्री राजा बाबु मेहता
44. श्री लोकेन्द्र चौपड़ा, इन्दौर
45. सौ. दमयंति चौपड़ा
46. श्री मोहनलाल रुनवाल
47. श्री सुजानमल मेहता
48. श्री आनंदीलाल लोढ़ा, इंदौर
49. मांगीबाई कटारिया
50. हेमा गांधी
51. सोनल शाह
52. पुष्पा पितलिया
53. शालु पितलिया
54. ज्योति पारख
55. अंगुरबाला दख

उपवास मास खमण

1. सौ. रेखा मिलनजी मेहता - 31
2. सौ. रीना अतुलजी दख - 31
3. सौ. आशा संजय मेहता - 31
4. पू. राजेन्द्र मुनिजी - 30

पू. गुरुदेव नवमंत्र जापाचार्य, अभिग्रहधारी श्री राजेश मुनिजी म.सा. द्वारा बेले-2 तेले की आराधना।

पू. श्री राजेन्द्रमुनि जी म.सा. द्वारा 9 एवं मासखमण तप की आराधना की गई।

पू. श्री विजय मुनिजी द्वारा 8,9,5 आदि विभिन्न प्रकार की तप आराधना की गई।

श्राविक वर्ग

1	श्रीमती रेखा बहन मिलनजी मेहता	32
2	आशा बहन मेहता	31
3	रीना बहन अतुलकुमारजी दख	31
4	श्रीमती प्रमिला ललीतकुमारजी गाँधी	21
5	श्रीमती सीमा बहन मनीषजी भण्डारी	11
6	श्रीमती नेहल विपुलजी पटवा	9
7	कु. अनुषा पारसजी चत्तर	9
8	आयुषी नवीनकुमारजी सकलेचा	9
9	नेहा बहन सकलेचा	9
10	मंजु बहन सुनिल कुमारजी भण्डारी	9
11	कल्पना बहन अरुण कुमारजी चौरड़िया	9
12	आयुषी अशोक कुमारजी गादिया	9
13	निर्मला बहन नाहर	9
14	सीमा बहन भण्डारी	8
15	पुष्पा बहना अशोककुमारजी नाणेचा	8
16	प्रतिमा बहन विनयचन्दजी पितलिया	8
17	चाँदकुवर बहन पटवा	8
18	कु. पायल नवीन कुमारजी सकलेचा	8
19	संगीता बहन दिलीप कुमारजी मोदी	8
20	रीता बहन रवीन्द्रकुमारजी गुगलिया	8
21	भावना बहन गाँधी	8
22	मधु बहन रमेशचन्द्रजी मोदी	8
23	कु. प्रियांशी श्री माल	8
24	कु. कृति दिनेशकुमारजी पटवा	8
25	कु. रानु अशोक कुमारजी मुणत	8
26	नेहा बहन मयंक कुमारजी गाँधी	8
27	श्रीमती सरला विनोदकुमारजी झामर	8
28	श्रीमती बबिता बहन लोढ़ा	8

श्रावक वर्ग

1	विपीन कुमार धन्नलालजी पितलिया	11
2	भंवरलालजी माणकलालजी पुनवान	11
3	प्रविण कुमारजी खुणीया	10
4	मणीलालजी समीरमलजी गाँधी	10
5	प्रमोदकुमारजी प्रकाशजी वोहरा सैलाना	9
6	अमृतलालजी चंदनमलजी मुणत	9
7	राही कुमार गादिया	8
8	रक्षीत कुमार मुणत	8
9	सुभाष कुमारजी भण्डारी	8
10	सुहासकुमार नरेन्द्र कुमारजी गाँधी	8
11	सचिन कुमार मांडोत	8
12	दिलीप कुमार शैतानमलजी मोदी	8
13	मनीष कुमारजी गादिया	8
14	वैभव कुमार ज्ञानमलजी मेहता	8
15	संतोष कुमार गाँधी	8
16	चिराग कुमार नलवाया	8
17	चिराग कुमार मंगलदीपजी झामर	8

क्या कारण है हनुमानजी के सारे शरीर पर सिंदूर लगाया जाता है ?

सीताजी स्नान करके आयी थीं। वस्त्र परिवर्तन के बाद माँग में सिंदूर भर रही थीं। उसी समय हनुमान जी माँ के दर्शन के लिए पहुँच जाते हैं।

हनुमानजी को बड़ा आश्चर्य होता है। स्नान करके आयी माँ सीता को ये क्या हुआ ? जो सिंदूर से अपना सिर खराब कर रही है। हनुमान से रहा नहीं गया। उन्होंने अपनी जिज्ञासा को माँ सीता से पूछा -माँ! ये क्या ? सिर सिंदूर से गंदा क्यों कर रही हो ?

माँ सीता ने कहा-हनुमान, ऐसा नहीं कहते। ये मैं माँग में सिंदूर भर रही हूँ।

हनुमान - इससे क्या होता है ?

माँ सीता ने कहा - इससे पति की उम्र बढ़ जाती है। हनुमान सोच में पड़ गये। चिंतन चला। भगवान राम तो इनके सिर्फ पति है। ये उनकी उम्र बढ़े इसलिये माँग में सिंदूर भर रही हैं, पर मेरे तो सब कुछ राम हैं। भला इतने से सिंदूर से कितनी उम्र बढ़ेगी ? हनुमान गोदाम में गये वहाँ सिंदूर सारे शरीर पर लगा लिया और पहुँचे राजसभा में। राम ने अजब हाल में हनुमान को देखकर पूछा-कहाँ गिर गये। तब हनुमान ने कहा-भगवन्। आज मैं माता के दर्शन करने गया। माँ माँग में सिंदूर भर रही थी। मैंने कारण पूछा माँ ने कहा कि इससे पति की उम्र बढ़ती है। भगवन्! मैंने सोचा इतने से सिंदूर से कितनी उम्र बढ़ेगी। भगवन्! आप तो मेरे सब कुछ हैं! सब कुछ। मैंने पूरे शरीर पर सिंदूर लगाकर अपने भगवन् को अमर कर दिया।

सुनते ही राम की आँखों में आँसू आ गये। हृदय भर गया। उन्होंने हनुमान को आशीर्वाद दिया - आज से दुनिया तुम्हारे शरीर पर सिंदूर लगाकर पूजेगी। तभी से आज तक भगवान के साथ भक्त भी पूजनीय बन गया। कैसे ? **सेवा से !** ये कहानी कितनी सच है पता नहीं पर इसकी शिक्षा सत्य है कि सेवा का मेवा मिलता है।

मेरे पास माँ है ....

मेरी पीढ़ी के हिन्दी फिल्म दर्शकों को यह डायलॉग स्मरण करने के लिए दिमाग पर ज्यादा जोर नहीं डालना पड़ेगा। हिन्दी फिल्म ''दीवार'' के एक दृश्य में नायक अमिताभ बच्चन जोकि फिल्म में एक स्मगलर के रोल में है, अपने ईमानदार पुलिस ऑफिसर भाई शशिकपूर को मिलने एक पुल के पास बुलाते हैं। जब बेईमानी और ईमानदारी के बीच बहस अपने चरम पर पहुँच जाती है तो अमिताभ कहते हैं –

... मेरे पास बंगला है, गाड़ी है, पैसा है, शोरहत है।
बोल .... तेरे पास क्या है ?
शशिकपूर का जबाव होता है ..... मेरे पास माँ है।
अमिताभ निरूत्तर हो जाते हैं और हॉल तालियों से गूंज उठता है।

यह चार शब्दों का जवाब हिन्दी फिल्म इतिहास का सबसे सुपरहिट डायलॉग हो गया। सलीम–जावेद की जोड़ी के लिये इस कालजयी डायलॉग में एक सीधा–सपाट संदेश छिपा है।

जिस भाई के पास सारी बुराइयाँ आ गई थीं वहाँ से माँ चली गई और जिस भाई के पास माँ आ गई थी वहाँ सारी अच्छाइयाँ खुद चल कर आ गईं।

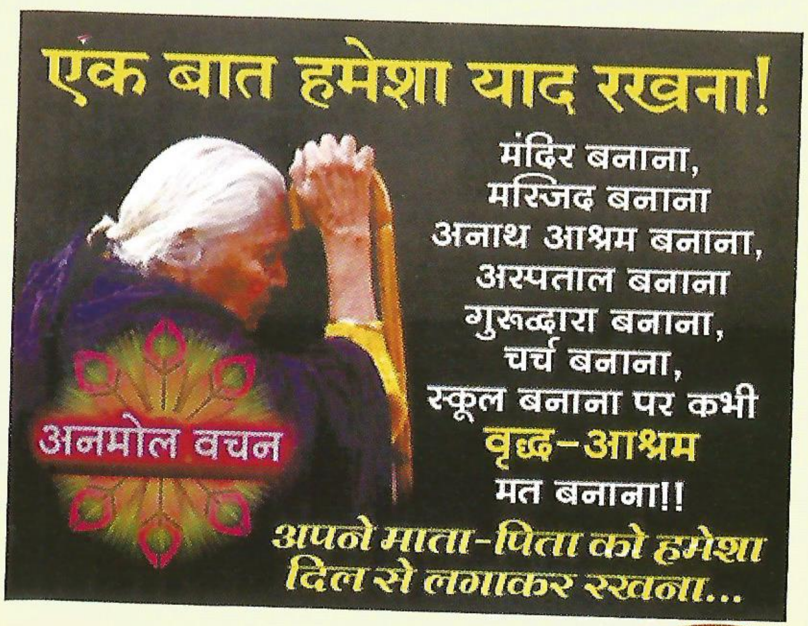

श्रीमान् नाथूलालजी - लीलमबाई कटारिया की स्मृति में
श्रीमान् श्रेणिककुमारजी - अंगुरबाला कटारिया
महावीर कुमार - ऋतु कटारिया
कु. मोना गविशा कटारिरया 265344
महावीर किराना एण्ड जनरल स्टोर्स, भगतपुरी, त्रिपोलिया गेट, रतलाम (म.प्र.)
07412-244294, 98274-34965, 97702-98443

बसंत-पुष्पा चौपड़ा
अर्पण-पायल चौपड़ा, मयंक-रविना चौपड़ा, जैनम-रितीका चौपड़ा
एवं समस्त चौपड़ा परिवार, कुशलगढ़ (राज.)
प्रतिष्ठान :
मे. हमारा पम्प, कुशलगढ़, मो. 09414102475
बसंत एच.पी., बाँसवाड़ा, मो. 094143-05999
मयंक डिस्ट्रीब्यूटर्स, कुशलगढ़, मो. 087691-78080
पुष्पा ज्वेलर्स, कुशलगढ़, मो. 094136-25283

गुप्तदान

शांत, सौम्य व्यक्तित्व, गौरवशाली नेतृत्व के धनी दानवीर, समाज रत्न

श्री आजाद कुमारजी मेहता

स्व. श्रीमती मांगीबाई मेहता

स्व. श्री मिश्रीमलजी मेहता

7 अप्रैल 1955 को जन्मे श्री आजादकुमारजी मेहता ने माननीय सेठ श्री मिश्रीमलजी सा. मेहता के यहाँ मांगीबाई की कुक्षी से जन्म लिया। आप मूलतः रावटी के निवासी हैं।

आप सन् 2003 में संघ के मंत्री बने। सन् 2006 में श्री संघ के अध्यक्ष पद पर आसीन हुये। संघ एकता के लिए आपने अपने पद से त्याग पत्र दिया। यह आपकी संघ निष्ठा का परिचायक है। 2012 में जनता ने आपको बहुमत से पुनः अध्यक्ष पद प्रदान किया। तब से आप निर्विघ्न नेतृत्व कर रहे हैं। आपके कार्यकाल में श्रीचंदनाजी म.सा., कल्पनाजी म.सा. का 2012 का एवं पू. प्रवर्तक श्री प्रकाशमुनिजी का 2013 तथा पू. श्री राजेशमुनिजी म.सा. का 2014 का सफल चातुर्मास संपन्न हुआ।

आप धर्म के साथ सामाजिक जीवन में भी सक्रिय हैं। आपको 2003 में विश्व हिन्दू परिषद् का जिलाअध्यक्ष बनाया जिसका आपने कुशलता से 10 वर्षों तक संचालन किया फिर स्वास्थ्य कारणों से स्वेच्छा से त्याग पत्र दिया।

आपके इन कार्यों में आपकी धर्मपत्नी श्रीमती आशादेवी, पुत्र आशीष मेहता, पुत्रवधु अनामिका मेहता, पुत्री ज्योति, जंवाई राहुल पिरोदिया का पूर्ण सहयोग है। पौत्री मोहिनी एवं देशना तथा पौत्र मंथन आपसे धार्मिक संस्कार पाकर आपकी राह पर अग्रसर हैं। हम आपके मंगलमय जीवन की कामना करते हैं।

प्राप्ति स्थल एवं संपर्क सूत्र

जयंतिलाल मेहता, चाँदनी चौक, रतलाम (म.प्र.), मो. : 98277-36335

राकेश गाँधी	वर्षा विनोद पितलिया	लोकेश मेहता	सचिन मांडोत	विकास पितलिया
94245-29195	94245-00616	9827260057	90098-11444	94245-27254
सुमन अमृत राठौड़	सुभाष टुकड़िया	राहुल चौपड़ा	गौतम खाबिया	पंकज वागरेचा
99266-49869	94259-26026	94133-06132	94136-25335	94245-86548

SMART RUNWAL_RATLAM 9827017701

सानिध्य चातुर्मास् सन् 2011

सानिध्य पू. श्री राजेश मुनि राजेन्द्र मुनि
धर्मलताजी म.सा. रतनकंवर जी म.सा. सुप्रतिभाजी म.सा.
अपूर्वा जी म.सा.

मासखमण तपस्वी

1.	पू. गुरुदेव श्री राजेश मुनि श्री म.सा.	30
2.	पू. श्री राजेन्द्र मुनिजी म.सा.	31
3.	पू. श्री सौम्य श्री जी म.सा.	31
4.	राकेश जी डागा	31
5.	श्रीमती श्रीकांताजी चिप्पड़	33
6.	श्री सुभाषजी पितलिया	31
7.	श्रीमती संगीतीजी पितलिया	31
8.	श्रीमती शीतलजी सांड	31
9.	श्रीमती सुषमाजी वन्यायक्या	31
10.	श्रीमती रंजनाजी बावेल	31
11.	श्रीमती मानू जी बम्बोरी	31
12.	श्रीमती पुष्पाजी कांठेड़	31
13.	श्रीमती हेमलताजी कांठेड़	30
14.	श्रीमती मोनाजी ओस्तवाल	31
15.	श्रीमती सरिताजी बावेल	31
16.	श्रीमती मधुजी लोढ़ा	31
17.	श्रीमती सरलाजी चौपड़ा	31
18.	श्री सुभाषजी चौपड़ा	31
19.	श्री मोहितजी डाकोलिया	31
20.	श्रीमती आभाजी टाटिया	30
21.	श्री संजय जी डागा	31
22.	श्रीमती अंजू जी काकंरिया	31
23.	श्रीमती संध्याजी वन्यायक्या	33
24.	श्रीमती जिनीजी काकंरिया	31
25.	श्री विमलजी डोसी	31
26.	साध्वी श्री सुप्रतिभाजी म.सा. द्वारा परदेशी तप	
27.	साध्वी श्री अपूर्वाजी म.सा. द्वारा अठाई तप	

15-18 तपस्वी

1. श्रीमती गुणमालाजी लूणिया
2. श्रीमती प्रेमलता बागरेचा
3. श्रीमती नयन बाला भटेवरा
4. श्रीमती अंगूरबाला मूणत
5. श्रीमती सरिताजी पटवा

8-11 तपस्वी

1. श्रीमती आशाजी वन्यायक्या
2. श्रीमती लीलादेवी सेलोत
3. श्री सुनील जी छिंगावत
4. श्रीमती कामिनी जी सांड
5. श्रीमती सीमाजी भंडारी
6. श्रीमती संध्याजी वन्यायक्या
7. श्री दीपेशजी लूणिया
8. श्रीमती अंजूजी काकंरिया
9. श्रीमती मोनिका जी बम
10. श्री अनिल जी राखेजा
11. श्रीमती उर्मिलाजी भटेवरा
12. श्रीमती रजनी जी बाफना
13. श्री लोकेश जी खाबिया
14. श्रीमती मीनाजी खाबिया
15. श्री हेमंतजी जैन
16. श्री संजयजी देशलहरा
17. श्री पिंकेश जी लोढ़ा
18. श्रीमती मिनलजी लोढ़ा
19. श्रीमती मेघाजी भटेवरा
20. कु. श्रेयाजी डागा
21. श्रीमती नैनबालाजी जैन
22. श्रीमती शीलाजी सेलोत
23. श्रीमती प्रीतिजी जैन
24. श्रीमती मंजूलाजी आंचलिया
25. श्रीमती अल्काजी वन्यायक्या
26. श्रीमती प्रेमलता पितलिया
27. श्रीमती शांताजी मूणत
28. श्रीमती भारती जी जैन
29. श्रीमती रानीजी सुराणा
30. श्रीमती शशिकलाजी मुरड़िया
31. श्रीमती सुनिताजी ओस्तवाल
32. श्रीमती सुषमाजी सुराणा
33. कु. सुरभि सेलोत
34. श्रीमति अमृता जी बोथरा
35. श्रीमती मंजूलाजी शाह
36. श्रीमती शीलाजी कोठारी
37. श्रीमती प्रमिलाजी दलाल
38. श्रीमती रेखाजी सांड
39. कु. रियाजी भटेवरा
40. श्रीमती सुनिताजी गाला
41. श्रीमती मधुबालाजी जैन
42. श्री महावीरजी जैन
43. श्री शांतिलालजी बोथरा
44. श्री नेमिचंदजी आंचलिया
45. श्री सज्ज्नसिंहजी झामर
46. श्री शैलेन्द्रजी छिंगावत
47. श्री श्रेयांशजी जैन
48. श्री प्रेमचंदजी भटेवरा
49. श्री कमलजी वन्यायक्या
50. श्री पिंकेशजी लोढ़ा
51. श्री संतोषजी ओस्तवाल
52. श्री नीतेश जी शाह
53. श्री हेमंत जी जैन
54. श्री राजकुमारीजी डाकोलिया
55. श्री ऋषभजी डागा
56. श्री संजीव जी जैन
57. श्री सुरेशजी पटवा
58. श्री मयूरजी गाला
59. श्री सुशीलजी भटेवरा
60. श्री पारसजी भटेवरा
61. श्रीमती संध्याजी वन्यायक्या
62. कु. निधि जी जैन
63. कु. पूर्वी जी सुराणा
64. श्री अमितजी चौपड़ा
65. कु. सिल्की जी जैन
66. कु. पिंकल जी जैन
67. श्रीमती विजया जी पटवा
68. श्री वर्धमानजी पटवा
69. श्रीमती फुलकंवरजी डोसी
70. श्री शिखरचंद जी बोथरा
71. श्री अशोकजी सांड
72. श्रीमती ज्योतिजी संघवी
73. श्रीमती निर्मलाजी राखेचा
74. श्री विक्रम नाबेडा

ऐतिहासिक वर्षावास की अविस्मरणीय झलकियाँ

1. राजमोहल्ला स्थानक से ऐतिहासिक मंगल प्रवेश
2. मासखमण की लडी का प्रारंभ तपस्वी राकेशजी डागा द्वारा
3. चातुर्मास का प्रारंभ 247 तेले तप की आराधना के साथ
4. पर्युषण पर्व पर 504 मेले तप की विराट आराधना
4. 5-5 सामायिक के साथ कौन बनेगा ज्ञानी गौतम का 45 दिवसीय आयोजन
5. पर्युषण पर्व पर 82 अट्ठाई तप का आयोजन
6. प्रति रविवार विशाल एकासना तप के 6 आयोजन
7. 25 मासखमण सम्पूर्ण वर्षावास में सम्पन्न
8. इंदौर में मासखमण की लडी चलाने वाला पहला संघ
8. चतुर्विध संघ का एक साथ मासखमण कराने का अवसर
9. राजेन्द्रमुनिजी के 10 उपवास + मासखमण,राजेशमुनिजी म.सा. एवं महा. श्री सौम्याश्रीजी का मासखमण
10. राजेश मुनिजी म.सा. द्वारा पूरे वर्षावास में केवल 25 दिन आहार ग्रहण
11. साध्वी अपूर्वाजी द्वारा 8 उपवास
12. महा. सुप्रतिभाजी म.सा. द्वारा परदेशी राजा का तप
13. मासखमण तपस्वीयों की दो विशाल शोभायात्राएँ
14. समस्त स्थानकवासी परम्पराओं के 99 प्रतिशत परिवारों का सहयोग
15. वर्षावास में प्रतिदिन एक गाय जीवनदान देने का संकल्प
16. चातुर्मास की स्मृति पक्षी चबूतरे का निर्माण संकल्प
17. स्थानकवासी संघ की सबसे बडी प्रतियोगिता अलेबेले अभिग्रह को आयोजित करने की स्वीकृति
18. पहली बार पति पत्नी दोनों संघ अध्यक्ष
19. संत सतियों के तप अनुमोदनार्थ उपवास, 3-3 सामायिक के साथ चौबीसी की नई परम्परा का शुभारंभ
20. राजेन्द्रमुनिजी के मासखमण पर 1000 से अधिक 3-3 सामायिक एवं 1300 उपवास के साथ तप के अनुमोदनार्थ चौबीसी का अनुपम प्रयोग
21. 580 से अधिक आजीवन प्रत्याख्यान-कच्चे पानी, रात्रि भोजन, जमीकंद, धार के गुरुभक्त परिवार द्वारा सभी को प्रभावना
22. प्रतिक्रमण संवत्सरी पर हजारों की उपस्थिति
23. ज्ञानी गौतम की राष्ट्रीय स्तर पर विशाल प्रतियोगिता का आयोजन
24. तीनों स्थानकों में चातुर्मास सम्पन्न
25. तपस्वी के साथ सहयोगी का भी सम्मान
26. चातुर्मास की समाप्ती के बाद जैन साधना भवन पर 207 श्रद्धालुओं के द्वारा प्रति रविवार प्रात: सामायिक करने की स्वीकृति
27. देवगुरू धर्म पत्रिका का विमोचन
28. नानी बाई पुस्तक का विमोचन

कैसी विडम्बना .... ?

मरने से पूर्व	मरने के बाद
• मरने के पूर्व मेरे पास कोई नहीं बैठा	• मरने के बाद अब सब चारों ओर बैठे है।
• फटे कपड़ों में जिंदगी गुजार दी	• अब नई शॉल/नये कपड़े पहना रहे हैं।
• मेरे किसी ने आँसू न पोछे?	• अब नकली आँसू बहा रहे हैं।
• जब मुझे रुपयों की जरुरत थी किसी ने नहीं दिये	• अब अर्थी पर पैसे लुटा रहे हैं।
• अपाहिज था तो कभी किसी ने सहारा न दिया	• अब कंधों पर उठा रहे है।
• जिंदा था तो सूखी रोटी खाई	• अब शरीर पर घी डाल रहे है
• जैसे तैसे जिंदगी गुजार दी पर बच्चों ने कभी भोजन नहीं कराया	• अब पूरे समाज को भोजन करा रहे हैं।
• कभी धर्म नहीं सुनाया	• अब जाप कर रहे हैं।
• कभी फलफ्रुट नहीं खिलाये	• अब अनाथों को फलफ्रुट बाँट रहे हैं।
• जीतेजी कभी हाथ नहीं जोड़े	• अब फोटो को हाथ जोड़ रहे हैं।
• जीते जी कभी पानी न पिलाया	• अब मेरी स्मृति में प्याऊ खोल रहे हैं।

सुरेन्द्र मेहता

स्व. केशरीमलजी सा के पुत्र सुरेन्द्र मेहता-स्नेहलता मेहता
आपके परिवार से सज्जनकंवर जी म. सा. के पास
दादी माँ विमलकंवर जी म.सा. दीक्षित हुए बेन. डॉ ललित प्रभाजी म.सा.
बुआ. सुमतिकंवर जी दीक्षित बने। आपकी पत्नी स्नेहलता धार्मिक हैं।
रुचि बेटी है एवं कंवरसा. अर्पित जैन सराफा व्यवसायी है।

स्नेहलता मेहता

एस. मुनीम जी एण्ड संस.
कसेरा बाजार, इन्दौर मोबा. 9425064747

आगमज्ञान प्रसार समिति के प्रकाशनः

सोते हुआ सबेरा (स्तवन संग्रह)

अलबेले अभिग्रह

नानी बाई- माँ के ऊपर प्रेरणास्पद प्रसंग

— पुस्तक हेतु संपर्कः —

पंकज वागरेचा	राहुल चौपड़ा	सुभाष टुकड़िया	दिनेश लोढा	प्रकाश चीपड़	तेजपाल काकल्या मिलाप काकल्या
मेघ नगर	कुशलगढ़	जावरा	बाँसवाड़ा	इन्दौर	
94254 86548	94133 06134	94259 26026	094133 06122	94250 60950	94250 89236

मुद्रण : नाकोड़ा पब्लिसर्श एण्ड प्रिंटर्स, इन्दौर 98262 90888